ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एक मात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

संस्थापक : सद्‌गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश

वार्षिक शुल्क : रु. 50 भारतवर्ष में
वार्षिक शुल्क : रु. 350 विदेश में



15 फरवरी 2004

वर्ष 24 अंक 4

उज्जयिनी तीर्थ क्षेत्र में

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

महाकुम्भ पर्व

आयोजन मंत्रण

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का अन्न क्षेत्र (छावनी)

1 5 अप्रैल (गुरूवार) से 4 मई (मंगलवार) 2004 तक

क्षिप्रा तट उज्जैन में,
कुम्भ पर्व स्नान ।
सन्त दरस सत्संग कर,
पाओ शान्ति सुजान ।।

८3वां चैत्र मेला

कलियुग में प्रधान है,
सेवा पुनि सत्संग ।
कहे टेऊँ जिसके किये,
होवे भव दुख भंग ।।

2 9 अप्रैल (गुरूवार) से 3 मई (सोमवार) 2004 तक

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातनधर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य योगीराज ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री १००८ सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से उज्जयिनी तीर्थ क्षेत्र में महाकुम्भ मेला १५ अप्रैल (गुरूवार) से ४ मई (मंगलवार) २००४ तक श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा । इस बीच जयपुर का चैत्र मेला भी उज्जैन में २९ अप्रैल से ३ मई २००४ तक मनाया जायेगा ।आप सब इस महाकुम्भ पर्व में आकर स्नान, सत्संग ,सेवा करके मानव जीवन को कृतार्थ करें ।

कार्यक्रम

प्रतिदिन कार्यक्रम

प्रात: ७ से ११ व सायं ४ से ८ बजे तक सत्संग एवं प्रात:-सायं भण्डारा होगा

मुख्य स्नान तिथि

१९.०४.२००४ सोमवार	सोमवती अमावस्या मुख्य स्नान
२२.०४.२००४ गुरूवार	अक्षय तृतीया मुख्य स्नान
२४.०४.२००४ शनिवार	वैशाख शुक्ल पंचमी मुख्य स्नान
०४.०५.२००४ मंगलवार	वैशाखी पूर्णिमा शाही स्नान

छावनी व चैत्र मेला कार्यक्रम

१५.०४.२००४ गुरूवार	प्रातः श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र आरंभ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ आरंभ, हवन व ध्वजावंदन
२८.०४.२००४ बुधवार	स्वामी गुरूमुखदासजी महाराज की ३९वीं पुण्यतिथि
२९.०४.२००४ गुरूवार	चैत्र मेले के निमित श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ आरंभ, हवन व सत्संग
०३.०५.२००४ सोमवार	प्रातःकाल सत्संग पाठों का भोग
०३.०५.२००४ सोमवार	सायंकाल पल्लव पाकर उत्सव का समापन

सेवा में :
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड,
जयपुर फोन: ०१४१-२३७२४२३,२४

नोट:
१. सभी यात्री आवश्यकतानुसार बिस्तर, ताला, टॉर्च एवं गिलास जरूर लावें ।
२. सोना-गहना व कीमती सामान साथ न लावें ।
३. कोई भी माता-बहिन अपने पिता, भाई या पुरूष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें ।

पता:
श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र (छावनी)
जंतर-मंतर रोड, लाल पुल के पास, उज्जैन
मो. ६४२५०-५३६९२, ९८२६०-१४८५०

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एक मात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

वर्ष 24 **प्रेम प्रकाश संदेश** अंक 4

मंगल आशीष

आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाशजी महाराज
सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाशजी महाराज

संरक्षण, मार्गदर्शन

सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

भारत में
एक वर्ष के लिए 50 रूपए
तीन वर्ष के लिए 140 रूपए
विदेश में
एक वर्ष के लिए 350 रूपए
तीन वर्ष के लिए 1000 रूपए

मूल्य एक प्रति 5 रूपए

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें शीघ्र ही मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए।

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र-व्यवहार के लिए पता :-
व्यवस्थापक: प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ, लश्कर ग्वालियर - 474001
फोन नं.- 0751-2454183, 2327427

-अनुक्रम-

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति शनिवार व रविवार प्रातः ८ से १२ बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए शुल्क जमा किया जा सकता है

कथा चूड़ाला शिखरध्वज-३१

आत्म ज्ञान

अनंत की यात्रा

जैसे मकड़ी जाला अपने आप में से निकालती है और फिर अपने आप में ही समाती है तो मकड़ी का जो जाला है वो कोई अन्य वस्तु नहीं वो तो मकड़ी से निकला है अर्थात मकड़ी उसे अपने मुख के द्वारा बनाती है और अगर उसको खत्म करना हो तो उसे खा जाती है. ऐसे ही सारी सृष्टि ब्रह्म से पैदा हुई है और फिर ब्रह्म में ही लीन हो जाती है. सृष्टि कोई ऐसे निर्मित नहीं हुई जैसे माँ के द्वारा बच्चे का जन्म होता है. माँ के तो जन्म देते ही बच्चा अलग और माँ अलग हो जाती है. परन्तु जब ये सृष्टि बनती है,सृष्टि का निर्माण होता है. तो ब्रह्मतत्व इतना व्यापक है जिसको समझना हमारी बुद्धि के बाहर की बात है अर्थात् परमात्मा ही प्रकृति है अलग नहीं. जड़ चेतन सभी जगह, सभी में आत्मतत्व एक ही है अर्थात् सब ब्रह्म ही है. भक्त की दृष्टि ज्ञानवान की दृष्टि ऐसी ही होती है कि उसे सभी में उस परमात्मा के दर्शन होते हैं, जबकि अज्ञानी को सारा संसार भिन्न-भिन्न होकर भासता है.

तैसे ये संसार अज्ञ को नाना होकर भासत है.
ज्ञानवान को अतंर-बाहर आत्म इक प्रकाशत है.

यहाँ तक कथा का प्रसंग हो के आया है. आज के प्रसंग में याज्ञवलक्य मुनि कहते हैं- हे भारद्वाज! मुनि वशिष्ठ जी कहते हैं- हे रामजी ! सतृगरू महाराज जी कहते हैं, हे जिज्ञासुओं ! मुमुक्षुओं ! रानी के अंतर में ये विवेक जाग्रत हो रहा है कि मैं आत्मा हूँ इस शरीर से अलग हूँ,ये सारा ही संसार ब्रह्म रूप है और मैं इस संसार से एक रूप होते हुए भी न्यारा हूँ. सबसे मिलिया सबसे न्यारा रानी विचार करती है कि ज्ञान प्राप्ति से पहले अज्ञान अवस्था में मुझे ये विचार होता था कि ये महल,ये पलंग है,ये दासियां है,मैं रानी हूं ऐसा अलग-अलग करके मैं जानती थी. परन्तु अब मुझे ये लगता है कि ये सभी तो हैं परन्तु इन सभी में मैं हूं और फिर मैं जो समझती हूं कि मैं ये शरीर हूं, परन्तु इस शरीर में भी मैं निर्लेप हूं. ऐसा अब मुझे अनुभव होता है. रानी के मन में क्या विवेक चल रहा है.

रानी अपने आप को जानत भई अभेद.
नभ ज्यू मैं निर्लेप हूं अक्रिय अचल अच्छेद.

रानी अंतरतम भेदती हुई गहराई में प्रवेश करते हुए विचार कर रही है कि मैं अभेद हूं अर्थात् मुझमें और किसी अन्य में कोई भेद नहीं है समस्त संसार भेद रहित है, ये तो हमारा अज्ञान है जो हमें भेद नजर आता है वास्तव में सभी कुछ अभेद है. जब ज्ञान की दृष्टि खुलती है:

उदीते परमानन्दे नाहं नात्वं ना वै जगत्

मुनि वशिष्ठ रामजी को योगवशिष्ठ में बताते हुए कहते हैं- हे रामजी ! जब हृदय में परमानन्द का उदय होता है जब वो ज्ञान उदित होता है जब हृदय में वो पक्की निष्ठा बन जाती है, फिर क्या होता है-उदिते परमानन्दं नाहं; मैं नहीं हूं. नात्वं; तुम भी नहीं हो. ना वै जगत; ना ही ये जगत है. कुछ भी है ही नहीं.

जो मैं और तू और ये जगत लगा हुआ है वो है ही अज्ञान के कारण. ये मैं तू और जगत सब अज्ञान का ही कार्य क्षेत्र है. ज्ञान का कार्य नहीं है. जैसे स्वप्न में संसार की सभी वस्तुएं नजर आती हैं परन्तु उठते ही वो समुद्र,वो नदी,वो पहाड़,वो रास्ते कहाँ चले गये,कहाँ गुम हो गये. इसी प्रकार जैसे ही हम ज्ञान में जागते है; जब ज्ञान की आंखे खुलती है; जब ज्ञान का रस आने लगता है हमको तो जो ये अज्ञान के कारण जगत भासता है, जो जगत में रस-बुद्धि है वो गुम होने लगता है.

हम सोचते हैं गुम कैसे हो जाएगा. स्वप्न से उठने पर जैसे वस्तुएं गुम होती हैं वैसे जाग्रत में ये संसार गुम नही हो जाएगा अपितु उसके अंदर जो भेदबुद्धि है, अपने-पराये के कारण जो आसक्ति या द्वेष भासता है वो सब गुम हो जाएगा और यदि संसार से अपना-पराया हटा दिया जाए तो जगत है ही नहीं.

अनिर्वचनीय जगत

संसार से आसक्ति गुम होते ही जो सत्ता है,जो तत्व उसका दर्शन होगा और जड़ में, पदार्थों में जो हमारी स्थूल दृष्टि

दृष्टि सूक्ष्मातिसूक्ष्म हो जाएगी. दृष्टि के सूक्ष्म होते ही उस सूक्ष्म का दर्शन होगा. बाहर दृष्टि नहीं होगी फिर हमारी उस तत्व पर दृष्टि होगी. फिर हमें सभी आकार भले अलग दिखेंगे परन्तु उन में एक परमात्मा के ही दर्शन होंगे. सबमें उसी ब्रह्म का ही दर्शन ा है.

साक्षी चेतन रम रहा जल-थल पुनि आकाश.
कहे टेऊँ तिह जानके, पाओ सुख अविनाश.

वो सब में रम रहा है,एक जैसा रम रहा है कण-कण में. उस नक की तरफ दृष्टि होगी हमारी.कोई भेद भासेगा ही नहीं फिर.

संसार का जो सत्यपन हमारे अंतर में भासता है कि ये र सच्चा है वो हमारे अंदर से समाप्त हो जायगा. संसार माया है, झूठा न सच्चा दोनो ही बातें है. ये संसार सत् भी नहीं,असत् भी . इसीलिए महापुरूषों ने अनिर्वचनीय बताया है.

सच्चा इसलिये नहीं कि ये सदैव नहीं रहता, निरन्तर अभाव ता रहा है और असत् इसीलिये नहीं क्योंकि नजर नहीं आता. त् वस्तु नजर नहीं आती, उसका भाव नहीं होता, कभी भी नहीं . जैसे आकाश के फूल,बंध्या का पुत्र,ससे (खरगोश) के सींग ऐसे क दृष्टांत आते हैं वेदान्त के अंदर बांझ नपुसंक का सुत चलिया और नपुसंक का पुत्र आकाश का जो बाग है उसके फूल लेने पर कैसे चला. ससे सींग का धनुष बनाया. सारी बातें ब-अजीब.

असत् अर्थात् जिसका कभी भाव न हो नासतो विद्यते भाव सत्य वह जिसका कभी अभाव नहीं होता नाभावो विद्यते सत्.

रानी अपने आप को यूं अभेद जानने लगी कि कोई भेद नहीं. सबमें मैं हूं सबमें रमिया सभी में उसी साक्षी चेतन की ज्योति रम रही है. जल में,थल में,आकाश में,जीव-जन्तु में,पेड़-पौधों में, पत्थर में, एक-एक कण में उसका प्रकाश है. रानी अपने आप को शरीर से अलग जानते हुए आगे कहने लगी-नभ ज्यों मैं निर्लेप हूं और नभ की भांति मैं निर्लेप हूं, आकाशवत् हूँ मैं. आकाश को कोई लिप्त नहीं कर सकता. आकाश में कोई बंधन नहीं. आकाश में बादल छाते हैं घटाएं काली आती हैं धूल के बादल छा जाते हैं आकाश को ढक लेते हैं लगता है आकाश घिर गया परन्तु उनके जाते ही आकाश पुनः वैसा का वैसा. दिखता भी है उसमें सब कुछ परन्तु अपने आप में वो उन सबसे निर्लेप रहता है. आकाश पर बाहरी किसी वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता न उसे अस्त्र काट सकता है न अग्नि जला सकती है न उसे पानी गीला कर सकता है ऐसे ही आत्मतत्व भी सभी से निर्लेप है उसको भी किसी का प्रभाव नहीं बदल सकता.

हमारे गुरू महाराज जी फरमाते थे कि कई लोग हाथों के बीच के खालीपन को दिखाकर कहते हैं कि ये देखो आत्मा है, ये ब्रह्म है. तर्क क्या देते हैं कि भगवान कहते हैं नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि शस्त्र से इस बीच के स्थान को काटो; कटेगा? नैनं दहति पावकः आग बीच के स्थान को जलाएगी न चैनं क्लेदयन्तापो जल इसे गीला नही कर सकता. न शोषयति मारूतः न ही हवा इसे सुखा सकती है. अतः ये जो बीच का खालीपन है, ये ब्रह्म है. विचार करे इन बातों का क्या ये ब्रह्म हुआ.

गुरु वंदना मंगलम्

रू मंगलम् गुरू देव मंगलम्.
रू मंगलम् गुरू ज्ञान मंगलम्.
रू मंगलम् गुरू ध्यान मंगलम्.
रू मंगलम् गुरू भक्ति मंगलम्.
रू मंगलम् गुरू कीर्ति मंगलम्.
रू मंगलम् गुरू श्रद्धा मंगलम्.
रू मंगलम् गुरू मार्ग मंगलम्.
रू मंगलम् गुरू चरण मंगलम्.
ऊँ मंगलम् टेऊँराम मंगलम्.
र्व मंगलम् सर्वानन्द मंगलम्.

शांति मंगलम् शांतिप्रकाश मंगलम्.
हरि मंगलम् हरिदासराम मंगलम्.
सत् मंगलम् सत्नाम साक्षी मंगलम्.
साक्षी मंगलम् सत्नाम मंगलम्.
ओम मंगलम् ओमकार मंगलम्.
राम मंगलम् सीयाराम मंगलम्.
सीया मंगलम् सीयाचरित्र मंगलम्.
कृष्ण मंगलम् कृष्ण बंशी मंगलम्.
गोपी मंगलम् गोकुलद्वार मंगलम्.
रास मंगलम् महारास मंगलम्.

गीता मंगलम् गीता ध्यान मंगलम्.
ब्रह्म मंगलम् ब्रह्म सृष्टि मंगलम्.
ब्रह्म मंगलम् ब्रह्मज्ञान मंगलम्.
विष्णु मंगलम् विष्णु पालन मंगलम्.
विष्णु मंगलम् विष्णु ध्यान मंगलम्.
शिव मंगलम् शिवशक्ति मंगलम्.
शिव मंगलम् शिवयोग मंगलम्.
ब्रह्म मंगलम् ब्रह्मानन्द मंगलम्.
गुरु मंगलम् गुरुदेव मंगलम्.

संत राजूराम, प्रेम प्रकाश आश्रम, चित्तौड़गढ़

मांस-मदिरा त्यागें

होली पर विशे

होली महोत्सव पर गुरू महाराज का शुभ स

शनिवार-चौथ, दीपावली, कार्तिक, शिवरात्रि, होली, जन्माष्टमी, रामनवमी, एकादशी, अमावस पूर्णिमा, चन्द्रदर्शन आदि जितने भी शुभ दिन वर्ष भर में आते है. उन पवित्र दिनों में क्या कभी भी निषिद्ध पदार्थ (मांस-मछली, शराब, सुरा-पान) का सेवन नहीं करना चाहि

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रत्येक वर्ष होली महोत्सव खण्डू गांव में ही मनाते थे. यह उत्सव पांच दिन तक चलता था. इस उपलक्ष में पूज्य गुरू महाराजजी पांचो दिन सुबह-शाम खण्डू शहर में सत्संग गंगा प्रवाहित करते थे. इस उत्सव में आस-पास के सभी गांव वाले भाग लेते थे और सत्संग गंगा का अमृतपान करते थे. इस तरह पांचो दिन ज्ञान-वैराग्य, भक्ति, धर्म-कर्म, प्रेम, ज्ञान-विज्ञान आदि विषयों पर उपदेश चलता था. पूज्य आचार्य श्री इस उत्सव में एक महत्वपूर्ण सन्देश देते थे. **होली महोत्सव के पांचो दिन पूरे गांव के लोगों में से न तो कोई मांस-मछली खायें और न ही मदिरापान करें.**

मांस खान से मनुष्य की-होवे बुद्धि मलीन ।
कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से-कर्म धर्म हो खीन ॥
मांस मछली खात जो-सुरा पान से हेत ।
ते नर नरके जात है-मात-पिता समेत ॥

पंचायत की तरफ से पूरे गांव में इस प्रकार की घोषणा करवा दी जाती थी. विजया दशमी, दीपावली, कार्तिक, शिवरात्रि, होली, जन्माष्टमी, एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या, चन्द्रदर्शन, शनिवारचौथ आदि जितने भी शुभ दिन वर्षभर में आते हैं उन पवित्र दिनों में ही क्या कभी भी निषिद्ध पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये.

अंत में पूरी सभा में मांस मछली व मदिरा न पा प्रतिज्ञा करवाते थे. इस प्रकार खण्डू गांव में होली महोत्सव ब के साथ मनाया जाता था और अन्तिम दिन प्रातः ४ बजे मेले होती थी. मनुष्य जीवन में हमें कभी मांस-मछली नहीं ख क्योंकि यह जीव हत्या है. उसका हमें बड़ा पाप लगता है.**जीव न दुखाओ दया सब पर कीजिये** हम जीवन दान न तो किसी भी मूक प्राणी का जीवन लेना महापाप है. हमारे शा हैं. मच्छी -म-न, च्छी अर्थात् मैं अच्छी नहीं हूं,अपवित्र हूं. क्या है. गन्दा पानी पीना,गन्दी जगह में रहना,मुर्दो का मांस खा जन्तु खाना. मुझे खाना माना पाप के भागी होना. अपवित्र हो खाना. अतः मछली का सेवन न करें.

जिसे मांस-मछली खाना छोड़नी हो वह कत्लखा देखकर आये तो स्वतः ही ग्लानि हो जावेगी. फिर आप स्व आदि खाना छोड़ देंगे. हिंसा न करना ही परम धर्म है. अग से पाप से,धर्म से बचना चाहते हैं तो कभी भूलकर भी मांस- न करो और दूसरों को भी न करने दो. तब ही हम हिन्दू ध निभा सकेगें और सच्चे हिन्दू कहलायेंगे. सा

अमरापुर स्

भजन

बिरह बसन्त मेरे घर आया-हृदय में भई होली रे.

1. बाग चिमन में पंकज-फूले-कोयल मैना भंवरा झूले,बोलत मीठी बोली रे.
2. सर्व सखी मिल गावन लागी-हरि भजन में हो अनुरागी,रंगी केसर चोली रे.
3. शीतल सुगन्ध पवन चलत है-मृदंग भेरी बीन बजत है,गावत गुनिजन टोली रे.
4. कहे टेऊँ भया जय जयकारा-होया आनन्द मंगल अपारा,दम दम जाऊँ घोली रे.

सन्तों के संग होली खेलो-पीवो प्रेम प्याला रे.

1. जांके पीवत होये बहारी-दिन दिन बढ़ती जाय खुमारी,होवे मन
2. श्रद्धा की तुम केसर करिये-इत्र अम्बीर श्रेष्ठ गुण धरिये,लाओ
3. कहे टेऊँ यह होरी गाये-ब्रह्मानन्द में वृति मिलाये,पाओ आनन्द



मेल-मिलाप का महापर्व होली



धी समाज में होली पर्व को किस प्रकार मनाया जाता रहा है बता रहे हैं जयपुर से वरिष्ठ साहित्यकार कन्हैया देवनानीजी

बसन्त ऋतु की पंचमी पर भारत देश के किसान लोग अपने श्रम के सुखद परिणामों को अपने खेतों में लहलहाती फसलों के रूप देखकर जब प्रफुल्लित हो उठते हैं, तो वे बेसुध होकर खुशी में -झूमकर नाचने गाने लगते हैं. ऐसे समय में उन्हें हर प्रकार की ी-ठिठोली, छेड़छाड़, राग-रागिनी, मस्ती आदि सभी प्रकार की लगी भाने लगती है और वे खुशी में एक दूसरे पर रंग उछालकर अनूठा त्यौहार मनाया करते हैं.जिसे होली कहा जाता है. सुख द्धि के इस रंगीले त्यौहार को हिन्दूओं के समस्त धर्मो-वर्गो में पूर्ण ास के साथ किसी न किसी रूप से मनाए जाने की प्राचीन परम्परा है. सिन्धी समुदाय के इतिहास के पन्नों को पलटने पर हमें कारी मिलती है कि उनमें यह रंग-रंगीला त्यौहार मनाने का रिवाज य समस्त समुदायों से भिन्नता लिए हुए है.

सिन्धी समुदाय में होली की तैयारियां फाल्गुन महीने की चांदनी प्रारंभ होते ही शुरू हो जाया करती हैं. महिलाएं व अविवाहित कियां इस महीने की पहली चांदनी रात से ही किसी मैदान या खुले न पर एकत्रित होकर सिन्धी लोक-नृत्यों आदि के साथ गीत गाया ती हैं. इसके अतिरिक्त कई स्त्रियां समूहों में गोलाकार बनाकर यां बजाती हुई नृत्य किया करती हैं. इस समय वे एक विशेष गीत सहरा कहते हैं-गाया करती हैं. वे देर रात्रि तक रस्सीकूद ड़ीअ-टिप्प), फिर फिर सौंटो आदि खेल भी खेला करती हैं. सिन्धी ज में महिलाओं की मानिन्द सिन्धी समुदाय के पुरूष भी चांदनी में रात्रि का भोजन करने के पश्चात् टोलियों की टोलियां बनाकर खुले स्थल को निकल पड़ते हैं. वे उस मैदान आदि में अलग-अलग बनाकर कबड्डी, खो-खो तथा सिन्धी खेल वन्झवटी आदि खेल करते हैं. इस प्रकार के खेल देर रात्रि तक ही नहीं, अपितु -कभी तो वे सुबह भोर फूटने तक बेसुध होकर खेला करते हैं.

होली के पहले दिन सिन्धी समुदाय में जंगलो से गाय के सूखे हुए उपलों (छेणों) को लाकर अपने घरों में रखा जाता है. फिर वे अपने कुल-ब्राह्मणों (पारिवारिक पंडितों) के घर जाकर वहां जल रहे उपलों (छेणों) में से एक उपला या उसका टुकड़ा अपने घर लाते हैं. ब्राह्मण के घर से लाए गये उस उपले से वे अपने घर में जंगल से लाए गये उपलों को फूंक-फूंककर जलाया करते हैं. अपने पारिवारिक पंडितों के घर से उनके समस्त यजमान एक-एक टुकड़ा ले जाकर अपने-अपने घरों के उपले जलाते हैं. इस अग्नि में किसी प्रकार के मिट्टी के तेल या अन्य ईंधन का प्रयोग नहीं किया जाता है. इस अग्नि को होलिका कहा जाता है.

प्राचीन परम्पराओं के अनुसार सिन्धी समुदाय के परिवार की एक महिला घर के समस्त सदस्यों की गिनती कर,उससे एक अधिक रोटी (कोकी) का आटा गूंदकर उसमें गुड़ मिश्रित कर, उन रोटियों के चारों ओर सूत का धागा लपेटकर धागे सहित मीठी रोटियों (कोकीयों) को उस उपलों वाली धूनी में पकाया करती हैं. इस होलिका में बनने वाली ये मीठी रोटियां सामान्य रोटियां से काफी मोटी हुआ करती हैं.

सिन्धी परिवारों में बनने वाली इन रोटियों में एक विशेष बात यह है कि रोटियां कितनी भी पक जाएं या जल जाएं, लेकिन उनके चारों और बांधा गया सूती धागा कभी नहीं जलता. रोटियां पक जाने के उपरान्त उन रोटियों को पकाने वाली महिला उन रोटियों को एक थाल में परोसकर अपने परिवार तथा अन्य पड़ौसी महिलाओं के साथ तालियां बजाती हुई उस जलती धूनी में कच्चे बेर अथवा ज्वार के दानें अर्पित करती हुई गाया करती हैं-

होलिका माता कजांइ कुल जो खैर
टिन वर्णन जो खैर हिन्दू-मुसलमाननि जो खैर
देस-परदेस रक्षा कजांइ सभिनिनि खे वधाईजा-वीझाइजां
अर्थात्- होलिका माता तीनों वर्णो का भला करना.

हिन्दू-मुसलमानों का भला करना. देस-परदेस में रहने वालों सभी की रक्षा करना. सभी को सुख-समृद्धि प्रदान करना.

इस गीत को गाती हुई सिन्धी महिलाएं उस जलती हुई धूनी (अग्नि-होलिका) के चारों और सात फेरे लगाती हैं. फेरे (चक्कर) लगाने के पश्चात् उस धूनी (धुईं) के सम्मुख थाल उठाने वाली स्त्री दण्डवत् होकर होलिका माता के सम्मुख क्षमा याचना करती है. इसके उपरान्त परम्परागत वह महिला उस धुनी की समस्त भस्म (राख) को अपने पूरे घर में, विशेषकर कमरों के कोनों में छिड़क दिया करती है. परिवार के सदस्यों के लिए गिनती से बनाई गई रोटियों के अतिरिक्त पकाई गई एक अतिरिक्त रोटी (कोकी/लोले) को वह स्त्री, किसी कन्या को दान कर दिया करती है. वह रोटी दान में जाने के उपरान्त बाकी बची रोटियों को परिवार के समस्त सदस्यों को एक-एक करके बांट दी जाती हैं. प्राचीन रिवाजों के अनुरूप सभी सदस्यों को वह रोटी अवश्य खानी होती है.

सिन्धी समुदाय में इस प्रकार होलिका दहन की परम्परा के साथ ही होली के दूसरे दिन धुलण्डी (धूड़िये) के दिन के बारे में यह मान्यता है कि प्राकृतिक रूप से इस दिन धूल उड़ती है. इसलिए धूल से मिश्रित इस शब्द को धूड़ियो कहा जाता है. इस दिन रात्रि को केसर के फूलों को भिगोकर रख दिया जाता है. सुबह जब वह पानी गीला हो जाता है तो सिन्धी लोग वही रंगीन पानी एक दूसरे पर उछालकर होली के त्यौहार में सराबोर हो जाते हैं. जिस व्यक्ति के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से वह पानी हानिकारक होता है, तो उसके साथ गुलाल की होली खेली जाती है. होली के दिन ही सिन्धी समुदायों में रात्रि को बच्चे चौराहे या खुले मैदानों में छोटी-बड़ी लकड़ियों को एकत्रित कर आग जलाकर धुलण्डी के आगमन का स्वागत किया करते हैं. सिन्धी समुदाय में होली के अवसर पर हर घर में घेवर (गीहर), पकौड़ियां आदि बनाने की परम्परा है. उस दिन सिन्धियों के घर आने-जाने वाले समस्त मेहमानों या होली खेलने के लिए घर में आने वाले अतिथियों, अड़ोसियों-पड़ौसियों, रिश्तेदारों या मित्रों आदि का उसी विशिष्ठ खाद्य सामग्री (घेवर व पकौड़ियों) से सत्कार किया जाकर परम्परागत होली खेली जाती है. उसी शहर में रहने वाली बहिन-बेटियों के घर पर भी कांसे की थाली में यही सामग्री रखकर पहुंचाने का परम्परागत रिवाज है.

सिन्धियों में धुलण्डी (धूड़िये) के दिन गुरूद्वारों (टिकाणों) या मंदिरों में कई ड्रमों एवं बाल्टियों में जल भरकर उसमें ना भांग घोटकर डाली जाती है. उस जल को मीठा बनाकर गु मंदिरों में आने जाने वाले समस्त महिलाओं व पुरूषों को इस प्रसाद (सुखो सेसा) के रूप में पिलाये जाने की परम्परा है. द्वारा होली मनाये जाने की इन सभी परम्पराओं के अलाव परिपाटी है कि होली के आस-पास के दिनों में यदि किसी रिश्तेदार या अड़ौस-पड़ौस में किसी का स्वर्गवास हो जा काफी लोगों का एक समूह उस शोकाकुल परिवार के घर पुरूष लोग शोकाकुल परिवार के समस्त पुरूषों को उनके गुलाल का टीका लगाकर शोक व्यक्त किया करते हैं. इ सिन्धियों में महिलाओं का भी समूह शोकाकुल परिवार की डूबी महिलाओं के घर में जाकर घेवर, पकौड़ियां आदि गुलाल का टीका लगाकर शोक प्रकट किया करती हैं.

इधर विभाजन के बाद हिन्दू-सिन्धी समुदाय अपने देश से विभाजित हुए हिन्दुस्तान देश में आ गया और बिख कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी व कच्छ से लेकर नागालैंड त रीति-रिवाजों की तरह सिन्धी समाज सभी प्रदेशों में मनाए अन्य तीज-त्यौहारों में आज सम्मिलित होकर अमूमन अप रीति-रिवाजों व परम्पराओं को भूल चुका है. लेकिन आज तबके के सिन्धी लोग, चाहे वे शहरों या गांवों में ही क्यों हों - दम तोड़ रही सिन्धियों की कला, संस्कृति, भाषा एवं प्राचीन रीति-रिवाजों की मानिन्द प्राण फूंके हुए हैं- इस अनूठे त्यौहार होली की प्राचीनता में भी.

बड़े बुजुर्गों का कहना है कि सिन्धी समुदाय में ह के पीछे आपसी कटुता व दुश्मनी (वैर भावना) का नाश ह आपस में प्रेम व सद्भाव की भावना बढ़ती है. यह त्यौ वालों में नम्रता आती है. नम्रता व्यक्ति की तरक्की एवं खु बड़े से बड़ा मूलमंत्र है. इस त्यौहार के पीछे यह कहा ज धरती पर रहने वाले केवल इन्सानोंके लिए ही नहीं बल्कि जीवजंतुओके सुख समृद्धिके लिए मनुष्यके मनमें अद्भुत रहती हैं जिन्हे वह अमली रूप देनेके लिए लालायित हो

> आपको परमात्मा ने जो कुछ धन आदि दिया है, वह बांट कर खाओ. यदि सब में नहीं तो पड़ौसियों में खाओ, अकेले नहीं.
>
> सद्गुरू सर्वा

बाल संदेश



भक्त बालक मो.हन

मोहनकी माता दरिद्र विधवा ब्राह्मणी थी और एक छोटे-से गाँव में रहती थी. गाँव से भीख माँगकर अपना तथा अपने बेटे का किसी प्रकार काम चलाती थी. जब मोहन छः वर्ष का हुआ,तब उसकी माता को उसके पढ़ने की चिन्ता हुई. ब्राह्मण का लड़का निरक्षर भट्टाचार्य रहे,यह तो ठीक नहीं है. गाँव से दो कोसपर एक पाठशाला थी. ब्राह्मणी अपने लड़के को लेकर वहाँ गयी. विधवा ब्राह्मणी की गरीबी पर दया करके अध्यापक ने उसके बेटे को पढ़ाना स्वीकार कर लिया. यद्यपि उस समय विद्यार्थी गुरूके घर ही रहकर पढ़ा करते थे. फिर भी मोहन बहुत छोटा था, अपनी माता से अलग वह रह नहीं सकता था और उसकी माता का मन भी अपने बेटे से अलग रहने का नहीं होता था. इसलिए मोहन रोज सबेरे पढ़ने जाता और शाम को घर लौट आता.

छः वर्ष के बालक मोहन को विद्या पढ़ने के लिये दो कोस सबेरे जाना पड़ता और दो कोस शाम को लौटना पड़ता.शाम को घर लौटते समय अँधेरा हो जाता था. रास्ते में कुछ दूर जंगल पड़ता था और इस जंगल में मोहन को बहुत डर लगता था. एक दिन गुरूजी के यहाँ कोई उत्सव था, मोहन को घर लौटने में बहुत देर हो गयी. अँधेरी रात में जंगली जानवरों का शब्द सुनकर बेचारा बालक भय से काँपने लगा. ब्राह्मणी भी देर होने के कारण अपने बच्चे को ढूँढ़ने निकली थी. किसी प्रकार मोहन को वह घर ले आयी. मोहन ने माता से कहा -'माँ! दूसरे लड़कों को ले जाने के लिए तो नौकर रहते हैं, मुझे बहुत डर लगता है, तू मेरे लिए भी एक नौकर रख दे.' बेचारे बालकको क्या पता कि उसकी माता कितनी दरिद्र है.ब्राह्मणी रोने लगी. माता को रोते देख मोहन बोला-'माँ! तू रो मत. मुझे नौकर नहीं चाहिये; पर हमारे और कोई नहीं है क्या?'

ब्राह्मणी ने कहा-'बेटा! एक गोपालको छोड़कर और कोई हमारा नहीं.'बालक मोहन ने इतना ही समझा कि कोई गोपाल है और वह उसका कुछ होता है. अपनी माता से उसने पूछा-' गोपाल कौन हैं माँ? वे हमारे क्या लगते हैं? कहाँ रहते हैं?'

ब्राह्मणी ने सरल भाव से कह दिया-'वे तुम्हारे भाई लगते हैं. रहते तो सभी जगह हैं,पर सहज में दीखते नहीं. हाँ कोई प्रेम से पुकारे तो अवश्य दिखते हैं.'

बालक की उत्सुकता बढ़ी. वह गोपाल भाई को भली प्रकार जान लेना चाहता था. उसने पूछा-'गोपाल मुझसे छोटे हैं या बड़े? अपने घर क्यों नहीं आते?'

माता ने कहा-'वे तुमसे बड़े हैं और घर भी आते हैं; किंतु हम लोग उन्हें देख नहीं सकते. उनको पाने के लिए जब कोई व्याकुल होकर उन्हें पुकारता है,तब उसके पास वे झट आ जाते हैं. मोहन ने कुछ सोचकर कहा-'जंगल में शाम को आते समय मुझे बड़ा डर लगता है. मैं खूब व्याकुल हो जाता हूँ.वहाँ मैं पुकारूँ तो गोपाल भाई आयेंगे?' माता ने कहा-'तू विश्वास से पुकारेगा तो अवश्य आयेंगे.'मोहन ने माता की बात अपने ढंगसे समझ ली. उसे विश्वास हो गया कि अब वन में पुकारने पर गोपाल भाई आ जायँगे. दूसरे दिन पाठशाला से लौटते समय वनमें पहुँचने पर जब उसे डर लगा, तब उसने पुकारा-'गोपाल भाई!तुम कहाँ हो?मुझे डर लगता है. मैं व्याकुल हो रहा हूँ. शीघ्र आओ, गोपाल भाई!'

अनाथ,अनाश्रय एवं दीनकी पुकार पर दौड़ पड़ना ही जिसका स्वभाव है, वह एक सरल विश्वासी बालक की पुकार का उत्तर न दे-यह सम्भव नहीं था. मोहन को अत्यन्त मधुर स्वर सुनायी पड़ा-'भैया! डर मत. मैं यह आया.' दो-चार पद चलते-न-चलते एक साँवरा-सलोना,पीताम्बरधारी,कमललोचन बालक वृक्षों के बीच से निकलकर मोहन के पास आ गया और उसका हाथ पकड़कर साथ-साथ चलने लगा,वन की सीमा तक मोहन को पहुँचाकर वह फिर लौट गया. घर पहुँचकर मोहन ने बड़े उत्साह से गोपाल भाई के मिलने की बात बतायी और अपने गोपाल भाई की सुन्दरता,दयालुता आदि का वर्णन करने लगा. माता के नेत्रों से आँसू गिरने लगे. उसने हाथ जोड़कर प्रभु को प्रणाम किया. उसने समझ लिया कि जो दयामय द्रौपदी तथा गजराज की पुकार सुनकर दौड़ पड़े थे, वे ही मेरे बालक की पुकार सुनकर भी आये थे.

मोहन को भला, अब जंगल का क्या भय. वनमें पहुँचते ही वह पुकारता और उसका गोपाल भाई तो जैसे उसकी पुकार की बाट जोहता ही बैठा रहा करता. दोनों भाई खेलते-कूदते वन से पार पहुँच

जाते. एक दिन पाठशाला में गुरूजी के पिता के वार्षिक श्राद्ध की तैयारी हो रही थी. गुरूजी किसी विद्यार्थी को कुछ और किसी को कुछ लाने को कह रहे थे. मोहन ने भी पूछा-'मैं क्या लाऊँ.' गुरूजी ने कहा-'बेटा!तुम्हें कुछ नहीं लाना होगा.' लेकिन मो[illegible] को यह अच्छा नहीं लगा कि सब सहपाठी कुछ लायें और मैं कुछ भी न लाऊँ. उसके हठ को देखकर गुरूजीने एक लोटा दूध ले आने को कह दिया. घर जाकर मोहनने मातासे गुरूजी के पिता के श्राद्ध की बात कह सुनायी और यह भी बताया कि उसे एक लोटा दूध ले जाना है.भला,ब्राह्मणी दूध कहाँ पाये? उसे दूध कौन देता? लेकिन मोहन रोने लगा. अन्त में माताने समझाया-'तू अपने गोपाल भाई से दूध माँग लेना. उनके पास बहुत गायें हैं, वे तुझे दूध दे देंगे.'

जंगल में पहुँचते ही गोपाल भाई को मोहन ने पुकारा और उनके आनेपर सब बातें बताकर दूध की माँग की गोपाल ने कहा-'मैं तो पहले से लोटा भर दूध ले आया हूँ. तुम इसे ले जाओ.' मोहन बड़ा प्रसन्न हुआ. पाठशालामें गुरूजी दूसरे लड़कों का उपहार लेने में लगे थे. मोहन ने कुछ देर प्रतीक्षा की कि उसके लाए दूध की ओर भी गुरूजी ध्यान देंगे, पर जब किसी ने ध्यान नहीं दिया, तब वह बोला-'गुरूजी!मैं दूध ले आया हूँ.'गुरूजी के सामने ढेरों सामग्रियाँ थीं, उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया. मोहन ने जब कई बार स्मरण दिलाया, तब झुँझलाकर बोले-'यह लड़का एक लुटिया दूध क्या ले आया, कान खाये डालता है. हमें जैसे निहाल कर देगा यह अपने दूध से. ले जाओ, किसी बर्तन में डालकर इसे यहाँसे हटाओ.' बेचारा मोहन खिन्न हो गया. उसका उत्साह ठंडा पड़ गया. उसकी आँखों में आँसू आ गये.

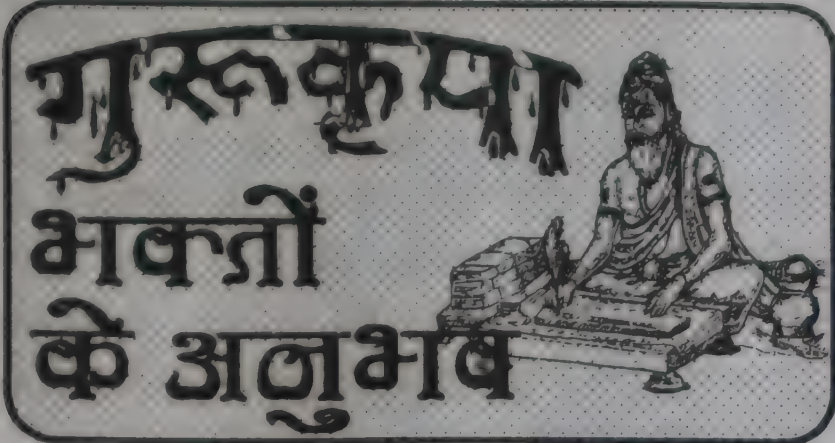
एक सेवक ने दूध का लोटा ले लिया और एक छोटे बर्तन में दूध डालने लगा. वह बर्तन भर जानेपर दूसरे में, फिर तीसरे में एक के बाद एक-कई छोटे-बड़े बर्तन भर गये, किंतु वह लौटा तो खाली होने का नाम ही नहीं लेता था. अनन्तस्वरूप भगवान् के हाथ का भरा वह पात्र जैसे अनन्त हो गया था सेवक ने दौड़कर गुरूजी को समाचार दिया. गुरूजी तथा और सब लोग वहाँ आये. सबके सामने दूध बर्तनों में डाला गया और कई बडे बर्तन फिर भर गये, लेकिन लोटे का दूध तनिक भी कम नहीं हुआ. द्रौपदी की साड़ी जिसने एक बार अनन्त बना दी थी, उसी ने लोटे के दूध को भी आज अक्षय कर दिया था. गुरूजी ने अब बड़े स्नेह से पूछा-'बेटा!यह दूध तुम कहाँसे ले आये?' बालक मोहन सरलता से बोला -'मेरे गोपाल भाई ने दिया.' गुरूजी ने चौंककर पूछा-'तुम्हारे तो कोई भाई नहीं है, गोपाल भाई कौन?'

मोहन ने बलपूर्वक कहा-'है क्यों नहीं. गोपाल भाई मेरा बड़ा भाई है. वह रोज मुझे वनमें मिल जाता है. उससे जो माँगा जाता है, तुरंत दे जाता है. माँ कहती है कि वह सब जगह रहता है, पर बिना व्याकुल होकर पुकारे दिखता नहीं.'

गुरूजी के नेत्र भर आये. मोहन को उन्होंने हृदय से लगा लिया. श्राद्ध में उस दूध की खीर बनी. ब्राह्मण खीर के स्वाद का वर्णन करते तृप्त नहीं होते थे. उस दूध का बना श्राद्धान्न पाकर गुरूजी के पितर तृप्त तो हुए ही, माया के चक्कर से मुक्त भी हो गये. जब श्राद्ध समाप्त होने पर सब लोग चले गये, तब संध्या के समय गुरूजी ने मोहन से कहा -'बेटा!मैं तेरे साथ चलता हूँ. तू मुझे अपने गोपाल भाई के दर्शन करा देगा?' मोहन ने कहा-'चलिये, गोपाल भाई तो पुकारते ही आ जाता है. वनमें पहुँचकर उसने पुकारा तो सुनायी पड़ा-'आज तो तुम अकेले नहीं हो, तुम्हें डर लगता नहीं, फिर मुझे क्यों बुलाते हो?' मोहन ने कहा-' मेरे गुरूजी तुम्हें देखना चाहते हैं. तुम झटपट आ जाओ.' गोपाल भाई आये सही, पर मोहन के लिए ही आये. जब उसने गुरूजी से पूछा कि उन्होंने उसके परम सुन्दर गोपाल भाई को देख तो लिया ? तब गुरूजी ने कहा-' मुझे तो कुछ नहीं दिखता. मैं तो एक प्रकाशमात्र देख रहा हूँ.'

अब मोहन ने कहा-' गोपाल भाई !तुम यह क्या खेल कर रहे हो? मेरे गुरूजी को क्यों नहीं दिखायी पड़ते ? भगवान् ने बताया-तुम्हारी बात दूसरी है तुम्हारा अन्तःकरण शुद्ध है. तुझमें सरल विश्वास है, इससे मैं तुम्हारे पास आता हूँ. तुम्हारे गुरूको जो प्रकाश दिख गया उनके लिये वही बहुत है. उसी से उनका कल्याण हो जायगा.'

उस दिव्य वाणी को सुनकर गुरूजी का हृदय गद्‌गद् हो गया अपने हृदय में उनको भगवान् के दर्शन हुए. उन्होंने भगवान् की स्तुति की और मोहन को लेकर जब उसके घर पहुँचे, तब भगवान् के प्रत्यक्ष दर्शन भी हो गये. गोपाल भाई वहाँ ब्राह्मणी की गोद में बैठे थे और उस माता के नेत्रों से आँसू की धारा बहकर उनको नहला रही थी.



सतगुरू स्वामी सर्वानन्द जी का अदभुत चमत्कार

सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम शिष्यों में से कोटा निवासी मास्टर केशवदास जी भी एक हैं जिनका नाम स्वामी जी के जीवन चरित्र पुस्तक में भी है.

मास्टर केशवदास जी के पुत्र शंकरलाल का विवाह ता. १६ फरवरी १९७२ को था. मास्टर साहब जी सतगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज,स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज और अन्य सभी प्रेम प्रकाश मंडल के सन्त महात्माओं को विवाह का निमन्त्रण देकर आये. गुरू महाराज जी की परम कृपा से सभी सन्त महात्मा विवाह समारोह में सम्मिलित हुए. सभी को उचित स्थान पर ठहराया गया.

विवाह (फेरों) के समय सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी (घोटपीउ) दूल्हे के पिता के स्थान पर स्वयं विराजमान हुए और बड़े आनन्द के साथ विवाह सम्पन्न हुआ. प्रभातवेला में मास्टर केशवदास जी अपने पुत्र और पुत्रवधु को विदा करवाके अपने गृह पर आये. विधि विधान से पुत्र वधु का गृहप्रवेश करवाया गया. कुछ समय पश्चात् ता. १७ फरवरी १९७२ को प्रातः ही मास्टर केशवदासजी की धर्मपत्नी श्रीमती मैनादेवी की तबीयत इतनी बिगड़ गयी कि उनको पलंग से नीचे तक लिटा दिया गया. मास्टर साहब ने मुझसे कहा कि आप स्वामीजी के पास जायें.

स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के स्थान पर मैं गया उन्होने मुझसे कहा कि यह जल लोटी में लेकर चलो में भी वहाँ आ रहा हूँ. स्वामीजी स्वयं वहाँ पधारे जो डाक्टर वहाँ पर उपस्थित थे उन सभी से विनम्रता से हट जाने को कहा सभी डाक्टर हट गये,स्वामीजी कुछ समय मौन रहे ओर भगवान से प्रार्थना की,पाँच मिनट का समय भी न लगा होगा कि मास्टर साहब की धर्मपत्नी उठकर बैठ गयी "सत्नाम साक्षी,सत्नाम साक्षी" मन्त्रोच्चारण करने लगी. उसके बाद कई वर्षों तक रही फिर स्वर्गवासी हो गयी. मैंने स्वामीजी का अदभुत चमत्कार अपनी आँखों से देखा फिर जयपुर में स्वामीजी से "गुरूदीक्षा" ली.

ओमप्रकाश वलैचा टूण्डला

त्रिकालदर्शी सत्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज

परम पूज्य सत्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज की सरलता,सहृदयता नीति मर्यादा के बारे में लीलाओं का वर्णन समय समय पर प्रेम प्रकाशियों द्वारा, प्रेमप्रकाश संदेश के माध्यम से जानने का सुअवसर प्राप्त होता रहता है. हमारे प्रेम प्रकाश मंडल के अंतर्गत वस्तुतः उनको मर्यादा पुरूषोत्तम का स्थान प्राप्त है और यह स्थान उन्हें यूं ही प्राप्त नंही हुआ है. वो चाहे समय की पाबंदी हो, धार्मिक अनुष्ठानों की पवित्रता बनाए रखने हेतु नियमों का कड़ाई से पालन स्वयं करना एवं अन्यों से करवाना हो, आचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की शिक्षाओं के पालन एवं **सत्नाम साक्षी** महामंत्र के जाप की अनिवार्यता संगत में प्रतिपादित करना हो या फिर स्वयं आचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊंराम जी महाराज जैसी अक्षय हस्ती के गादीनशीन होते हुए भी सादगी पूर्व जीवनचर्या अपनाना हो, गुरू पूजा के दिन स्वयं की पूजा करवाने से मना कर देना एवं आचार्य श्री की पूजा अर्चना करने का आदेश देना, स्वयं का जन्म दिन मनाने से इंकार कर देना और उत्तर में यह कहना कि- "आचार्य श्री स्वयं जब विराजमान है तो उनके सामने अपना जन्मदिन मनाना क्या उचित होगा?" ये सारे प्रसंग उन्हें मर्यादा पुरूषोत्तम की पदवी से भी कहीं ऊँचा स्थान प्रदान करते हैं.

मुझे उनके नजदीकी सानिध्य का सौभाग्य सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की जन्म शताब्दी के सुअवसर पर हरिद्वार मेले से मिलना प्रारम्भ हुआ. उसके बाद कई अवसरों पर प्राप्त हुए उनके सामीप्य के आनंद का वर्णन शब्दों से करना संभव नही है. सिर्फ महसूस करके "गूंगे को गुड़ का स्वाद" वाली उक्ति ही चरितार्थ होती है.

बात सन् १९९८ की है, रायपुर में सांई जी के साथ राजनांदगांव प्रवास के संदर्भ में व्यवस्था संबंधी बातें चल रही थीं. अचानक सांई जी ने बड़े सहज भाव से पूछा- "कृष्णलाल तुम्हारे रिटायर होने में बाकी तीन साल हैं न?"मैं चौंका, सांई जी के श्रीमुख पर एक रहस्यमय मुस्कान थी. मैंने हाथ जोड़कर कहा-नहीं सांई अभी दस

साल बाकी हैं. अच्छा! इतना कहकर फिर मुस्कुराए और एक टक मेरे मस्तक की तरफ भेदी नजरों से ताकते रहे. फिर चतुराई पूर्ण तरीके से उन्होंने बात को बदल दिया और बात आई गई हो गई.

पुनः १६६६ को चैत्र मेले में जयपुर में सांई जी ने वही प्रश्न किया लेकिन इस बार उन्होंने ढाई साल बाकी हैं न? कहा. उनके बोलने का अंदाज इतना सहज था कि कहीं भी किसी को ऐसा नहीं लगा कि वे कोई भविष्यवाणी कर रहे हों.मैंने वैसे ही हाथ जोड़कर कहा- नहीं साईं अभी लगभग साढ़े नौ साल बाकी हैं. उन्होने बिल्कुल अनभिज्ञता वाले भाव चेहरे पर लाते हुए, "अच्छा ऐसा है क्या" कहा और भाव ऐसे बना लिए जैसे सबको यह महसूस हो कि सांईं जी भूल रहे हैं, यही घटना हरिद्वार मेला १६६६ में दोहराई और फिर दो माह बाद छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान मेरे घर पर भी उन्होंने यही शब्द दुहराए लेकिन हर बार उनका प्रश्न करने का ढंग और बात टाल देने का तरीका इतना सहज होता था कि किसी को लेश मात्र भी भनक न पड़े कि वे कोई भविष्यवाणी कर रहे थे. बल्कि उसके ठीक उलट वो ऐसा दिखावा करते थे कि क्या करूं आज कल कुछ ज्यादा ही भूलने लगा हूँ.

राजनांदगांव में मेरे घर पर उनका यह अंतिम प्रवास था उसके बाद मेरा ट्रांसफर ग्वालियर हो गया और जनवरी २००० में मैं अपना परिवार लेकर ग्वालियर चला गया. दो माह बाद वहां स्वामी गणेशानंदजी महाराज के जन्मोत्सव समारोह में उनका दर्शन लाभ प्राप्त हुआ. वे वहां के दरबार में ऊपर अपने कक्ष में विराजमान थे. मैं सपरिवार कक्ष में दर्शन करके बैठा ही था कि उन्होंने फिर बड़े प्यार भरे लहजे में पूछा- क्यों कृष्णलाल अगले साल रिटायर हो रहे हो न? अब शायद मेरा सब्र जवाब दे रहा था- मैंने हाथ जोड़कर प्रार्थना भरे लहजे में कहा- "सांईं अभी तो पूरे आठ साल बाकी है, अब ये पता नहीं आपने क्या रचना रच रखी है, सांईं होता तो वही है जो आपने निर्धारित कर रखा है." फिर वही रहस्यमयी मुस्कान जो आज तक मेरे हृदय पटल पर खुदी हुई है, बिखेरते हुए बोले-अच्छा ठीक है ठीक है-इस बार हम गाड़ी में तुम्हारा राजनांदगांव स्टेशन पार कर रहे थे तो तुम्हारी याद आई थी लेकिन तुम तो वहां थे नहीं. मेरा हृदय उस समय मुझे धिक्कार रहा था जैसे कह रहा हो "हाय कृष्ण तुम मौका चूक गए अपने सांई को एकबार फिर घर बुलाने का. क्या सांई के प्रवास तक तुम अपने परिवार को राजनांदगांव में नहीं रोक सकते थे." पर क्या करें कुछ किया नहीं जा सकता था मुझे सर्विस के कारण आना ही पड़ा(मैं L.I.C.में आफिसर था)

अगस्त २००० में उनके ब्रह्मलीन होने के बाद मेरी पारिवारि परिस्थितियों में अकस्मात् ऐसे मोड़ आना शुरू हुए कि मेरे परिवा को ग्वालियर छोड़कर राजनांदगांव वापस आना पड़ा लेकिन मुझे अकेले, सर्विस के कारण ग्वालियर में रहना पड़ा. परिस्थितियों की जटिलता और बढ़ती गई एवं हालात ऐसे बन गए कि मुझे परिवा के साथ रहना अनिवार्य महसूस होने लगा और मुझे स्वैच्छिव रिटायरमेंट लेने का निर्णय लेना पड़ा. परिणामतः ५ सितम्बर २००' को मैं रिटायर हो गया.

पिछले तीन वर्षों से सांई जी द्वारा बार-बार इशारे देने क अर्थ, क्या इसके अलावा और कुछ निकाला जा सकता है कि सांई ज त्रिकालदर्शी थे. उन्हें मेरे समय से पहले रिटायरमेंट लेने की पू जानकारी थी, लेकिन यहाँ भी वे स्वयं को जाहिर न करने वाली नी पर ही चले और उन्होंने अन्य बड़बोले गुरूओं की तरह अपने शिष्य को भविष्य बताकर प्रभावित करने वाला कार्य नहीं किया और स्वं को छुपा कर ही रखा. परंतु यह तो सच है न-.

भक्ति करे पाताल में भनक पड़े आकाश
रजब तीनों लोक में छुटो न हरि का दास

किशनचंद माधवानी, राजनांदगां

।। ज्ञानी को समझाना बड़ा मुश्किल ।।

साधारण व्यक्ति को समझाना सरल होता है. उन्हें समझाने पर वह समझ जाता है. पर ज्ञानी को समझाना बड़ा मुश्किल होता है वह सब कुछ जानते हुऐ भी अपनी बात पर भी अडिग रहता है.

एक राहगीर को काशी जाना था, सो रास्ता चलते समय उसकी दृष्टि मील के पत्थर पर पड़ी. काशी की दूरी और दिशा का संकेत उस पत्थर पर खुदा था. राहगीर नासमझी से रूक कर वहीं बैठ गया. कहने लगा, "अंकन गलत नहीं हो सकता. प्रमाणित लोगों ने लिखा है. काशी आ गई है. अब आगे जाने की क्या जरूरत रही?" कोई समझदार वहां से निकला और पत्थर के पास व्यक्ति से बैठने का कारण जाना. तो कहा, "पत्थर पर संकेत भर है. काशी पहुंचना है तो पैरों से चलकर दूरी पार करनी होगी." भोले व्यक्ति ने अपनी भूल मानी और आगे चल पड़ा. पर समझदारों को समझाया जाना अत्यंत कठिन है. वे शास्त्र पढ़ते व सुनते रहते हैं और सोचते रहते हैं. पर किसी की मानते नहीं! अतः आत्मकल्याण का उदेद्श्य पूरा नहीं हो पाता.

-साधक

यात्रा दर्शन

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व सन्त मण्डली का देशाटन

सद्गुरु टेऊँराम ज्ञानगंगा की भक्तिरसधारा का प्रवाह उमड़ा नवीन प्रेम प्रकाश आश्रमों में

भगवान लक्ष्मीनारायण व सद्गुरु भगवान के दिव्य स्वरुपों के दर्शन से रोमांचित हुए प्रेमी

११७ वर्ष पूर्व लोक-कल्याण निमित सद्गुरू टेऊँराम ज्ञानगंगा का अवतरण अखण्ड भारत के सिन्धप्रदेश के खण्डू ग्राम में हुआ था और उसी ज्ञानगंगा का बढ़ता हुआ प्रवाह भक्तिरसधारा के रूप में बह चला नवीन प्रेमप्रकाश आश्रमों में. श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज,संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानंदजी महाराज,संत जयदेवजी,संत हरिओमलालजी के पावन सानिध्य में आस्था की ईंटों से नवनिर्मित प्रेमप्रकाश आश्रमों में सत्संगामृत की भक्ति रसधारा प्रवाहित हो उठी है. जिसमें भगवद् प्रेमी जिज्ञासु निरंतर डूबे रहेगें,मानुषदेह को सार्थक करके यह केन्द्र हजारों लाखों भक्तजनों की आध्यात्मिक उन्नतिमें सहायक होगें. आध्यात्मिक शक्ति से परिपूर्ण इन केन्द्रों पर इष्टदेव जगदीश्वर लक्ष्मीनारायण व आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की मनमोहक मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा आश्रम परिसरमें बनाये गये सुन्दरतम मन्दिरोंमें प्रतिष्ठिपित की गई हैं, जिनके दिव्यदेवीय दर्शनों से ही अशान्त हृदयमें शान्ति का आभास होता है. ऐसे देवीय स्थानों की उपयोगिता का तो कहना ही क्या है- डबरा-मुरैनामें सद्गुरू टेऊँराम ज्ञानगंगा को अपने क्षेत्रोंमें अखण्ड रूप से प्रवाहमान करने के लिए व्याकुलता से प्रतीक्षित है ग्वालियर अंचल (ड्बरा मुरैना) के प्रेमीभक्त. आइए हम सब श्री सद्गुरू महाराजजी के सानिध्य में विचरण करें.

नासिक 7 जनवरी 2004

मुम्बई खार वार्षिक महोत्सव पूर्ण कर सड़क यात्रा द्वारा ७ जनवरी को नासिक पहुंचे. जहां पर होलाराम कॉलोनी के झूलेलाल मंदिर पर प्रेमियों द्वारा फूलमालाओं से स्वागत किया गया. झूलेलाल मंदिर के पास बने विशाल हॉल में सत्संग का कार्यक्रम रहा,जहां सैकड़ो प्रेमियों ने दर्शन सत्संग का लाभ प्राप्त किया. श्री मोतीराम जी के घर पर भंडारे का कार्यक्रम हुआ. श्री झूलेलाल मंदिर पर आचार्य श्री सतूगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज,श्री सतूगुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज,श्री सतूगुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज,श्री सतूगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज के पावन श्रीविग्रहों का भावपूर्ण वैदिक मंत्रो द्वारा पूजन कर स्थापना की गई व आरती कर श्री गुरूवर सतूगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज द्वारा पल्लव पाया गया. तत्पश्चात् प्रेम प्रकाश धाम ढिंढोरी रोड महालक्ष्मी सिनेमा के पास दर्शन करके प्रेमी चन्दूलाल जी के निवास स्थान पर थोड़ा विश्राम करके श्री त्रयम्बकेश्वर दर्शनार्थ चले. इस भूतभावन श्री भगवान का दर्शन करने हेतु श्री गुरूवर के साथ मुम्बई नासिक के कई प्रेमी भी सम्मिलित थे. शाम को ६ बजे चलकर प्रथम श्री त्रिदेव भगवान का दर्शनकर गंगा गोदावरी मंदिर,घाट पर दर्शनकर गंगा जल आचमन करके प्रेमियों के निवास स्थान पर दर्शनों का लाभ देते हुए रात्रि १२:३० पर नासिक रेलवे स्टेशन से हावड़ा एक्सप्रेस द्वारा रायपुर के लिये प्रस्थान किया गया,स्टेशन पर कई प्रेमीयों ने पूज्य स्वामीजी को विदा करते हुए प्रार्थना की, कि स्वामीजी आप फिर कब दर्शन देंगे. जल्दी आना हमें भूल न जाना.

रायपुर 8 से 11 जनवरी 2004

प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिक महोत्सव

निर्धारित समय ४:४५ से पूर्व ही शाम ४ बजे से रायपुर स्टेशन पर विशाल जन-समूह हाथों में फूलमालाएं लिये हुए सद्गुरू महाराज जी के स्वागतार्थ उपस्थित था. सायं ठीक ४:४५ पर हावड़ा एक्सप्रेस प्लेटफार्म की ओर आती हुई दिखी और सद्गुरू महाराज जी के दर्शनों के लिए व्याकुल प्रेमियों की अधीरता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गयी.

सद्गुरू टेऊँरामजी महाराजकी जयघोष के साथ सारा गगन गूंज उठा. अपार जनसमूह के मध्य श्री गुरूदेव स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ऐसे शोभा दे रहे थे. जैसे कि तारों के मध्य चन्द्रमा शोभायमान रहते हैं. स्वागत-सत्कार के पश्चात् एक प्रेमी द्वारा ली गयी नई कार जिसका पूजन रिबन काटकर पूज्य स्वामी जी महाराज द्वारा किया गया. जिसमें पूज्य स्वामी जी के साथ सन्त हरीओमलालजी व सन्त श्रीमुक्त,भक्त मूलचन्द, सन्त दयाप्रकाशजी भी बैठे थे. साथ में एक फूलों से सजी हुई जीप चल रही थी यहां पर फोटोग्राफरों द्वारा फोटोस व मूवी निकाली जा रही थी तत्पश्चात कटोरा तालाब से शोभायात्रा निकाली गयी. १२ कारों तथा अनेक

मोटर सायकिलों व स्कूटरों पर ध्वजा लगाये गये थे,जयकारा करते हुए बैण्डबाजों के साथ डांडिया नृत्य करते हुए राजेन्द्रनगर व शैलेन्द्रनगर होते हुए प्रेम प्रकाश आश्रम पहुंचे,जहां पर प्रेमियों द्वारा पुष्पवर्षा की जा रही थी. सांय ६ से ७ बजे तक सत्संग का कार्यक्रम रहा.पूरा आश्रम प्रेमियोंसे अन्दर बाहर खचाखच भरा था.

भक्त मूलचन्द ने- **भागनि सां घर मुंहिंजे आयो,सन्त सचनि जो टोलो अजब अमोलो**

सन्त श्रीमुक्त- **भेनरु भाग खुलिया गुरु घर में आया.**

सन्त लक्ष्मण- **मेरी लाज रखो प्रभु पैज रखो द्धवारी मैं आया हूं शरणि तुम्हारी**

भक्त केवलराम- **मिलता है सच्चा सुख केवल गुरुदेव आपके चरणों में**

सन्त हरिओमलाल ने- **मुंहिंजा आया सन्त सुजान थी जहिंतां तनु मनु धनु कुर्बान थी**

भजन गायन के पश्चात् सतुगुरू स्वामी श्री भगतप्रकाशजी महाराज ने अमृत बरसाते हुए कहा-

मन के हारे हारिये मन के जीते जीत
मन ही से प्रभु पाइये मन ही से प्रतीत

भजन- **जे मन पंहिंजे खे मारीन्दे तां पाण तरी जगु तारीन्दे**

मन को संसार से मोड़कर भगवान की ओर जोड़ना है. मारने का मतलब यही है. अभ्यास करने से धीरे-धीरे मन नाम स्मरण में लग जायेगा. देव दुर्लभ मानव जीवन को सद्विचारों आचरणों से सफल करना मनुष्य का कर्तव्य है. सतुपुरूषों के संग से ही परमात्मा का मार्ग मिलता है.

सन्त गुरु परमात्मा सांचे संगी जान
कहे टेऊँ इन तीन से कर लो प्रेम सुजान

बादल कभी-कभी सूर्य को ढक लेते हैं परन्तु पवन के आवेग से वह विसर्जित हो जाते हैं. ऐसे मन के कुविचारों से गुरू ज्ञान कभी-कभी ढक जाता है. प्रेम (पवन) वेग से वे विचार दूर होते हैं महापुरूषों की कृपा जिस पर होती है उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है द्रोपदी का थोड़ा सा दान अनंत वस्त्ररूप देकर परमात्मा ने लाज रखी. प्रेम की पुकार ईश्वर को भी आने के लिए मजबूर करती है.

१० जनवरी २००४- **रायपुर के माना क्षेत्रमें सन्त शद्धाराम दरबार में संत श्री युधिष्ठरलालजी से भेंट-**पूज्य श्री सतुगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संतमंडली व प्रेमियों सहित शद्धाणी दरबार पहुंचे जहां पूज्य स्वामी जी का यथा योग्य स्वागत किया गया,सन्तगण आपस में एक दूसरे से मिले व परस्पर स्थान पर आने हेतु निमंत्रण दिया.

१० जनवरी सांयकाल ऑडियो कैसेट द्वारा भजनों को गाकर अनेक बच्चों ने मनोहारी नृत्य करते हुए प्रार्थना स्वरूप गीत गाकर सारी संगति में धूम मचायी तालियो की गड़गड़ाहट से सारी संगति के साथ गगन भी गूंज उठा.

(१) पाँच बालिकाओं द्वारा गुरू प्रार्थनाअष्टक का प्रथम चरण गाया व हाथों में आरती की थालीयां लिए हुए नृत्य किया.

(2) **मेरे सतगुरु टेऊँराम तुम्हें बार-बार प्रणाम,तेरे चरणों मे आकर मेरे मन को मिले आराम** एक बालिका ने उपरोक्त भजन गाकर सतुगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के समक्ष नृत्य किया.

(३) आठ बालिकाओं द्वारा जीवन इतिहास सतुगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज का गाकर नृत्य किया- **थोड़ा सा इतिहास सुनो अब सतगुरु टेऊँराम का,नगर-नगरमें नाद बजाया साखी और सत्नाम का** एक छोटा बालक प्रथम चरण गाते हुए दिखाया गया माता कृष्णा की गोद में.

(4) **मेरे सतगुरु दीन दयाला दे दर्शन गुरु गोपाला, तेरे दर्शन कारण मेरा मनुवा है मतवाला रे** भजन के दो चरण हुए जिनमें ५ छोटी बालिकाओं ने जो कि ६ साल की थीं नृत्य किया.

(५) १८ वर्षीय सात बच्चीयों ने नृत्य करते हुए विश्व प्रसिद्ध भजन गाया **शल नांऊ न तुंहिंजो विसिरे, मुंहिंजा सतगुरु सांई दिलि मां.**

(६) एक बच्ची ने भजन गाया **मूंखे सभु कुछु मिलियो नाम मां सतगुरु सांई तुंहिंजे ज्ञान मां, जो न सोचो समझो-समझो.**

(७) दो बालिकाओं ने ऐसा नृत्य किया कि सभी मंत्रमुग्ध हो गये. **न नामु थो जपी न ज्ञानु थो रखणी,हक ते दुखी आंहीं मन तूं**

(८) तीन बालिकाओं ने भजन पर नृत्य प्रस्तुति दी. **तू छो भुलो आंहीं, मन खे नथो समझाईं, हीरे जाहिड़ो जनमु अमोलकु ऐशनि में छो गंवाईं. पाठ पूजा केई कया थेई,भक्ति सत्संग केई बुधा थई पोइ भी तू हिन दुनिया अन्दर तूं किनों आहीं.**

(९) एक बच्ची ने आशीर्वाद हाथ दिखाते हुए गाया.**पंजई जिनजे पांद में आहिनि, रग रग तिनिजी रचाई, मुंहिंजां सच्चा सांई राम.**

नृत्य-गायन में भाग लेने वाले बच्चे-

ममता ठाकुर,संजना दीपानी,संध्या तलरेजा,टीना दीपानी,रूची खेमानी,सुमन तलरेजा,करिश्मा नवलानी,प्रियंका मोटवानी,निकिता नवलानी,मनीष मोटवानी,गुंजन थावानी,अंजली होतवानी,नेहा चिमनानी,दिव्या मोटवानी,पुशमिना मोटवानी,निकिता मोटवानी,आरती तलरेजा,मोनिका सबलानी,हैपी रामचंदानी.

११ जनवरी २००४- आज मेले का समापन दिवस है. प्रातःकाल ८:१५ बजे से सदुगुरू महाराज व सन्तमण्डली के सानिध्य में हवन यज्ञ व श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावन्दन में बड़ी संख्या में प्रेमियों ने भाग लिया.सत्संग सभामें सन्तश्री युधिष्ठरलालजी ने भी आकर दोपहर ११:३० से १२:३० तक सत्संग में भाग लिया. सत्संग उपरान्त आम भण्डारे में हजारों की संख्या मे भक्तों ने गुरूदेव भगवान का पावन प्रसाद प्रेमपूर्वक ग्रहण किया. सायंकालीन सत्संग सभा का शुभारम्भ ठीक ४:३० बजे हुआ. सन्त

श्रीमुक्त,भक्त मूलचंदजी, सन्त हरिओमलाल जी के सत्संग प्रवचनों के पश्चात् सतगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने अमृत बरसाते हुए भक्तजनों को तृप्त करते हुए कहा.

हरि मेली है सन्त जन हरि से देत मिलाय
कहे टेऊँ छोड़त नहीं जो जन शरणी आय

सन्त शरण में आये को कभी छोड़ते नहीं,संसार के नाते एक-एक करके छोड़ देते हैं

चाम-दाम का है यह नाता, नातो किससे कौन निभाता.

जो माता-पिता कहें बन जाना,आशीर्वाद बड़ों की हो तो दुख सुख मे परिवर्तित होते हैं. जीवन में सुख दुख की घड़ी आवे मन को विचलित न करें. धीरजरूपी मोती शांतिरूप हीरे सन्तों से हमें मिलते हैं. महापुरूषो की शक्ति अमर है.

विश्व व्यापक होय रहा तुम जून चराचर मांही

ईश्वर से मिलने पर वह हर समय हर जगह किस-किस रूप में प्रकट होकर कार्य करते हैं. ईश्वर प्राप्त करके ईश्वर रूप बन जाते हैं स्मरण करके,सर्वकर्म को सिद्ध करते हैं.अनंत शक्ति आप प्रकट है. भंडार भरे हैं जिन्होने विश्वास रखा उनको प्राप्त हुए हैं. पुत्र धन वस्तु की प्राप्ति प्रारब्ध अनुसार मिलते हैं. नाम सुमति का दान मांगने से और सबकुछ मिलेगा आशीर्वाद सच्ची है नाम में मन लगे घर पर आकर यह मांगे नाम सुमति का दान मांगे जो लोक-परलोक में काम आवे,जीवन शरीर मिला है. शरीर को सफल बनावें. **और काज तेरे किते न काम,साध संगति भज केवल नाम** सब को सुख शांति मैं दे सकूं. सत्संग नदी मे डुबकी लगाइये तो शान्ति सुख की प्राप्ति होगी. **जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ** नाम लिया सत्संग किया है तो भला हमारा ही होगा. यही कल्याण का साधन है. दान यही मांगे नाम की तरफ मन लगे. **सांई इतना दीजिए जामें कुटुम्ब समाय** माया से किनारा करें ज्यादा माया ममता में फसना दुख का रूप है. स्मरण नाम जप से जीवन को सफल बनावें अरदास पल्लव पावें. आश्रम के वार्षिक उत्सव की पूर्णाहुति सद्गुरू महाराज जी द्वारा पल्लव पाकर की गई. इसके पश्चात् अमरापुर धुनि का जो गायन हुआ, सभी प्रेमी सुधबुध भूलकर नाचने लगे, ढांढिया नृत्य करते हुए सद्गुरू महाराज व संतमण्डली की परिक्रमा करते हुए प्रेमियों के इस उमंग भरे दृश्य को देखने से ऐसा आभास हो रहा था, जैसे हम सब अमरापुर स्थान पर हैं, और देखा जाये तो सच में हैं भी हम सब अमरापुर में ही.

भाटापारा 12 से 14 जनवरी 2004 तक
माता समुझबाई का वर्सी उत्सव

परम पूज्य माता समुझबाई का वार्षिक वर्सी उत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम, माता देवालयपारा भाटापारा में १० से १४ जनवरी २००४ तक मनाया गया. वर्सी उत्सव का शुभारम्भ १० जनवरी को प्रातःकाल हवन करके किया गया. सन्त नरेशलाल के द्वारा श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का आरंभ किया गया. इसी अवसर पर बाबा गरीबदास मंदिर में प्रेम प्रकाश मण्डली भाटापारा द्वारा ११ वें विशाल निःशुल्क नेत्र शिविर को भी लगाया गया.

माता समुझबाई की पुण्यतिथि महोत्सव के उपलक्ष में शोभायात्रा

१३ जनवरी दोपहर ३:३० बजे प्रेम प्रकाश आश्रम से शोभायात्रा आरम्भ हुई जिसमें भाटापारा के गणमान्य व्यक्तियों के अलावा शहर के सैकड़ों भक्तों ने भाग लिया,कई प्रेमियों द्वारा रास्ते में स्वागतद्वार लगाये जाकर प्रसाद जल की व्यवस्था की हुई थी,भक्तों द्वारा पुष्पवर्षा करते हुए अभिनन्दन किया जा रहा था. फूलोंसे सजी जीप में श्री गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के साथ सन्त हरिओमलाल जी,सन्त लक्ष्मण,सन्त संजय,द्वारकादास व देशराज भक्तगण भी शामिल थे. रायगढ़,रायपुर,दिल्ली,उल्हासनगर व अन्य कई शहरों से आये प्रेमी भी शोभायात्रामें सम्मिलित थे.संत दयाप्रकाश जी,संत श्रीमुक्त,बाबा रामप्रकाश,भक्त मूलचंदजी भी अन्य वाहनों में सवार थे. मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम दरबार व राधा कृष्ण के स्वरूपों के साथ कीर्तन भजन मंडली द्वारा उच्च स्वर से हरिनाम संकीर्तन की मौज में प्रेमीगण भगवान व सद्गुरू महाराज के प्रेम में मस्त थे. शोभायात्रा शहर के प्रमुख रास्तों से होती हुई मार्ग में आये हुए मंदिरों की परिक्रमा करते हुए सायंकाल ७ बजे आश्रम पर पहुंची.

१४ जनवरी को प्रातः बाबा गरीबदास सेवा मंडल द्वारा आयोजित सत्संग कार्यक्रम प्रातः ७:३० से ९ बजे तक रहा जिसमें सन्त श्रीमुक्त,सन्त हरिओमलाल ने सन्तमहिमा गान करते हुए बाबा गुरदासराम के गुणों का बखान किया. नाम की महिमा व मानव जीवनकी महता पर सतुगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज द्वारा अमृत वर्खा की गई.

आज ही प्रातःकाल सत्संग में सर्वप्रथम संत संजय कुमार द्वारा प्रार्थना गायन हुआ,उल्हासनगर से आयी हुयी माता डॉ.मीरा व दिल्ली से आये हुये भक्त केवलराम द्वारा भजन प्रस्तुत किये गए. संत हरिओमलाल जी ने श्री माता समुझबाई के जीवन चरितामृत का अपने सत्संग में उल्लेख किया. सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने संत संग व नाम के ऊपर प्रेमीयों को अमृत पिलाया. तत्पश्चात् पाठों के भोग व आम-भंडारे का कार्यक्रम संपन्न हुआ. सायंकाल ७ से ९ बजे तक समापन सत्संग सभा में सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने भजन गायन करते हुए बताया-

पवनि यादि पल-पल प्रीतम प्यारा,
विसारिया न विसरनि सजण से सूहारा

तत्पश्चात् सिन्धी कॉलोनी सन्त कंवरराम स्कूल धर्मशाला में सत्संग किया. स्कूल व्यवस्थापकों द्वारा श्री गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का फूलमालाओं से स्वागत किया गया.भगत मूलचंद,सन्त लक्ष्मण तथा सन्त श्रीमुक्त,सन्त हरिओमलाल ने श्री गुरूदेव आचार्यश्री का गुणगान किया तत्पश्चात् सतूगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज जी ने मानवजीवन की उपयोगिता व धर्मकर्म के ऊपर प्रकाश डालते हुए सत्संग समाप्त किया. आरती उपरान्त प्रेमियों के घरों पर चरण पखारते हुए धर्मशाला में प्रसाद पाकर कोरबा के लिये प्रस्थान किया.

कोरबा 15 से 17 जनवरी 2004

स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश आश्रमसे २ किलोमीटर पहले ही पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व सन्त मण्डली के आगमन पर प्रेमी भक्तों द्वारा फूलमालाओं से स्वागत किया गया. तत्पश्चात् जयकार की मधुर ध्वनी से नाचते गाते रानी रोड स्थित प्रेमप्रकाश आश्रम में शाम ५ बजे पहुंचे,पहुंचने के उपरान्त सत्संग आरम्भ हुआ जिसमें पहले माताओं व सन्त नरेशलाल इन्दौर,सन्त श्रीमुक्त,सन्त हरिओमलाल के पश्चात् सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने अमृतमयी वचनों की वर्खा करते हुए बताया-

बार-बार वर मांगहू हर्ष देहि श्रीरंग,
पद सरोज अनपायनी भक्ति सदा सत्संग
हरदमु सुमति सच्ची दे मूंरवे सभनि सुरवनि जी रास गुरु
कुमति किनीअ रवे कढु तूं कोरे जनमु क्यो जहिं नासु गुरु
लाए नीहुं निभाया तोसां तन में जेसीं स्वास गुरु
मुश्किल में भीं मुंह ना मोरियां अटलु रहे विश्वास गुरु
हथिड़ा जोड़े अर्जु क्यां थो मुंहिंजी सुणु अरदास गुरु

कोरबा में प्रेमियों को अमृताशीष देते हुए सद्गुरू स्वामी श्री भगतप्रकाशजी महाराज ने कहा सतूगुरू बुद्धि के नैन में डाले अंजन ज्ञान कह टेऊँ तम भ्रम हर दिखलावे भगवान ईश्वर ने सर्वोतम वस्तु दी है मन बुद्धि इन्द्रियां जिसमें अपार शक्ति भी है थोड़ा सा यतन करके यह ईश्वरके मिलने के लिये समय का सदुपयोग करें. समय का अति कदर करना खोइये न कुसंग में जो बचे व्यवहार से सो सफल कर सत्संग में सन्त शरणागति को ज्ञान के द्वारा विचार स्वभाव आचरण पवित्र करके पशुतुल्य जीवन को मनुष्य देव व भगवान स्वरूप बना सकता है. शनिवार के पवित्र दिवस पर प्रातःकाल ६:३० बजे हवन व १०:३० बजे सत्संग आरंभ हुआ तत्पश्चात् भंडारा किया गया.

सायंकाल ५ से ७ बजे तक सत्संग हुआ जिसमें माता मोहिनी,माता मीरा व अन्य माताओं ने भजनों को गाया तत्पश्चात् सन्त लक्ष्मण,सन्त श्रीमुक्त,भक्त मूलचंद ने खिल्लू के उद्धार का प्रसंग बताया व सन्त हरिओमलालजी ने सत्संग भजन किया अन्त में श्री गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महारा[ज] ने आचार्य सतूगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के लीला चरित्रों व भजन का आनंद सारी संगत को दिया. पल्लव पाकर उत्सव समापन किया, मात[ा] पम्मीबाई ने विदाई का भजन गाकर अश्रुपूर्ण भाव से आशीष मांगा.

चापा 18 जनवरी

भाटापारा बिलासपुर सड़क मार्ग से अमरापुर वाहन द्वारा चलक[र] रास्ते में प्रेमी आकर मिले बेमेतरा वाले जिन्होने स्वागत जलपान [की] व्यवस्था भी की हुई थी.आशीर्वाद देते हुए प्रातः ६ बजे प्रेमी श्री मनोहरला[ल] के घर पर पधारे जहां सारी संगति को भजनामृत का पान कराया,आरत[ी] कर आशीर्वाद पल्लव पाया इन्ही प्रेमी के घर पर प्रति शनिवार को सत्सं[ग] होता है जहां कई प्रेमी आकर लाभ लेते हैं. श्री वरियलदासजी ने प्रेमिय[ों] के सहयोग से पूज्य सद्गुरू महाराजजी का हर्षोल्लास से स्वागत किया.

बिलासपुर 18 जनवरी

बिलासपुर में सन्त बुधरमल के भाई ओंकारलाल व पूज्य स्वाम[ी] देवप्रकाशजी महाराज की बड़ी बहिन व दर्शनलाल के घर पर चरण पखार[े] पल्लव पाया व कुंभ मेला के संदर्भ सभी को सूचित किया. बिलासपुर [में] कई प्रेमी रहते हैं. अथाह प्रेमवश सद्गुरू महाराज जी से बिलासपुर पर [भी] सदैव कृपा करने की विनय की. सन्त कंवरराम नगर में सतूगुरू स्वाम[ी] भगतप्रकाश जी महाराज की अमृत वर्खा का लाभ लेने सैकड़ों प्रेमी पहुंच[े]

रायगढ 18 जनवरी

रायगढ़ पहुंचने पर पूज्य सिन्धी पंचायत द्वारा सिन्धी धर्मशाला [में] श्री गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व सन्त मण्डली का फूलमाला[ओं] से स्वागत किया गया. यहां पर अपार जनसमूह से सत्संग सभाग[ार] खचाखच भरा हुआ था सन्त हरिओमलाल द्वारा भजन गाया गया व [श्री] गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने आशीष वचन कहते हुए पल्ल[व] पाया तत्पश्चात् स्वलपहार कर प्रसादी पाकर बरगढ़ के लिये प्रस्थान किय[ा] रायगढ़ के प्रेमी भी साथ में चले.

बरगढ़ (उड़ीसा) 18-19 जनवरी

श्री अमरापुर वाहन द्वारा कोरबा से चापा बिलासपुर रायगढ़ [के] प्रेमियों को दर्शन आशीर्वाद देते हुए श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सतू[गुरू] स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज सन्तमण्डली व कई प्रेमियों सहित बरगढ़ [जो] छत्तीसगढ़ सीमा पर उड़ीसा राज्य में आता है जहां पर सिन्धी समाज [के] २५-३० परिवार हैं जहां कि सन्त महापुरूषों के लिये अटूट प्रेम है. सतू[गुरू] स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के पधारने पर सैकड़ों प्रेमी दर्शन हेतु पध[ारे] व शहनाई वादन,ढपली वादन करते हुए एक मंदिर के भगत ने अद्[भुत] झांकी प्रस्तुत की सतूनाम साक्षी की धुनि से सारी संगति को भाव विभ[ोर]

कर दिया.

बरगढ़ पहुंचने पर श्री हरीराम,प्रेमचन्द,होतचन्द आसूदानी परिवार के यहां पर निवास किया जोकि सद्गुरू महाराज जी के अनन्य प्रेमी हैं इनके यहां पर स्थापित मंदिर में नियमपूर्वक हवन कार्यक्रम भी हुआ. सभी सन्तों व प्रेमियों सहित श्री गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज भी हवन में संलग्न हुए,दो दिवसीय सत्संग समारोह सिन्धी धर्मशाला में आयोजित किया गया था जहां अपार जनसमूह ने भाग लिया. धर्म कर्म व दैनिक आचार विचारों व नाम स्मरण की शिक्षा देते हुए मानव जीवन को सार्थक बनाने का उपदेश सद्गुरू महाराज जी द्वारा दिया गया.

धमतरी 20 से 21 जनवरी

बरगढ़ से अमरापुर वाहनमें चलकर श्री सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज सन्त मण्डली सहित धमतरी पहुंचे. धमतरी पहुंचने पर अपार जन समूह उपस्थित था श्री गुरूवर के स्वागत हेतु. दिव्यदर्शनों से आलोकित प्रेमियों ने सद्गुरू महाराजजी का हार्दिक स्वागत किया. यहां पर भक्त अशोककुमार के यहां पर प्रवास हुआ,सत्संग का कार्यक्रम निर्माणाधीन प्रेम प्रकाश आश्रम भूमि पर किया गया जहां पर दूर-दूर से आकर कई प्रेमियों ने दर्शन सत्संग सेवा का लाभ लिया.

भानुप्रतापपुर 22 जनवरी

धमतरी से चलकर भानुप्रतापपुर में प्रेमियों को दर्शन सत्संग का लाभ दिया,छोटा सा शहर प्रेम की बाहुल्यता का अंकन नहीं किया जा सकता,अल्पप्रवासमें भी सत्संगदर्शन हेतु प्रेमी ऐसे उमड़ पड़े कि वर्षों से दर्शन हेतु लालायित थे तत्पश्चात् भोजन पाकर दल्लीराजहरा के लिए रवाना हुये.

दल्लीराजहरा 22 जनवरी

दल्लीराजहरा अमरापुरवाहन द्वारा पहुंचे जहां पर बैंडबाजो के साथ नाचते गाते प्रेमियों ने फूलमालाओं से स्वागत किया. सांयकाल ५ से ६ बजे तक सत्संगामृत का प्रेमियों ने पान किया,सिन्धी धर्मशाला में आयोजित सत्संगसभा में वहां के पंचायतों प्रेमियों द्वारा स्वामी जी का हार्दिक अभिनन्दन किया गया. श्री गुरूवर के अनन्य प्रेमी श्री आवतराम जी ने सेवा व रहने का कार्य भार प्रेमियों के सहयोग से सम्भाला.

भिलाई-दुर्ग 23-24 जनवरी

दुर्ग पहुंचने पर श्री भागचन्दजी के नेतृत्व में बड़ी संख्या में भिलाई दुर्ग के प्रेमियों ने सद्गुरू महाराजजी व संतमण्डली का फूलमालाओं से स्वागत किया. दो दिवसीय सत्संग समागम में दूर-दूर के प्रेमियों ने पहुंचकर दर्शन सत्संग का लाभ लिया, सत्संग का कार्यक्रम श्री जयबाबा आश्रम निजधाम में हुआ.भाटापारा व रायपुर के कई प्रेमियों ने भी पधार कर दर्शन सत्संग का लाभ लिया,गोंदियासे चलकर सन्त हरिओमलालने प्रेमियों सहित भाग लिया.

बेमेतरा 25 जनवरी

बेमेतरा में प्रेमी श्री जमनालाल के पुत्री के विवाह उपलक्ष में सत्संग किया व आशीर्वाद प्रदान किया बेमेतरा के सभी प्रेमी दर्शन सत्संग का लाभ लेकर धन्य हुए. प्रवास भी इन्ही के यहां किया गया.

राजनांदगांव 26 जनवरी

सद्गुरू महाराजजी व सन्तमण्डली का स्वागत नगरप्रवेश द्वार पर श्री कृष्णलाल के नेतृत्व में बड़ी संख्या में प्रेमियों द्वारा किया गया,सन्तमण्डली के रहने की व्यवस्था श्री किशनचंदजी के निवास पर की गई थी. सत्संग का आयोजन सिंधी धर्मशाला गुरूद्वारे में किया गया जहां स्थानीयवासियों ने बड़ी संख्या में सम्मिलित होकर सत्संग दर्शन का लाभ प्राप्त किया.

गोंदिया 27 से 29 जनवरी

प्रेम प्रकाश आश्रम का उद्घाटन व मूर्ति स्थापना समारोह

२५ जनवरी- प्रातःकाल आज सूर्योदय के साथ नवीन प्रेम प्रकाश आश्रम का विशाल प्रांगण जहां कि पूर्व में ही हवन की तैयारियां हो चुकी थी यहां पर प्रेम प्रकाश मण्डली के साथ सन्त हरीश कुमार साथ में सन्त हरिओमलाल जी भी उपस्थिति हुए,प्रातःकाल प्रार्थना से पंचदिवसीय महोत्सव आरम्भ हुआ. तत्पश्चात् सभी देवी देवताओं को आह्वान करके विधिविधान द्वारा वेदमंत्र उच्चारण के साथ ६ ब्राह्मणों द्वारा पूजन आरम्भ हुआ. इसके बाद मंत्र जाप व विष्णु सहस्त्र नाम पाठ,श्रीमद् भगवद् गीता,श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहब का पाठ सन्त श्री हरीश कुमार व सन्त हरिओमलाल जी द्वारा आरंभ किया गया. हवन कार्य भी विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ.पूरा सत्संग हॉल खचाखच भरा हुआ था, अपार खुशी से भरे प्रेमियों के हृदय में प्रेम का प्रवाह अविरल बह रहा था. यह पूजन हवन का कार्यक्रम १२ बजे तक चला. दूसरे दिन सन्त श्री जयदेवलालजी व सन्त प्रतापरायजी भी पधारे. आज भी प्रातः व सांयःकाल पूजन हवन का कार्यक्रम रहा.

२७ जनवरी- आज सद्गुरू महाराज जी का शुभ आगमन हो रहा था,सूर्य उदय के पूर्व ही प्रेमी उल्लासित हृदय से परिपूर्ण प्रफुल्ल प्रेमी रंगबिरंगी वेशभूषाओं में प्रेम प्रकाश आश्रम पर एकत्रित होना शुरू हो गये थे. यहां से सभी भक्तजन शोभायात्रा प्रारंभ स्थल पर पहुंचे. प्रातः ६:३० बजे सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज सन्तमण्डली सहित पधारे,उल्लासित मन से हजारों भक्तजनों ने पुष्पवर्षा व सद्गुरू महाराजजी की गगनभेदी सामूहिक जयघोष से सद्गुरू महाराजजी का स्वागत किया. आश्रम से लगभग २ किलोमीटर पूर्व से शोभायात्रा बैंडबाजों के साथ निकाली गयी.

फूलों से सजे हुए एक रथमें पूज्य गुरूवर के साथ सन्त जयदेवलालजी व सन्त हरिओमलालजी भी विराजमान थे. आतिशबाजी प्रदर्शन के साथ प्रेमीगण मोटर सायकलों पर सवार होकर सतूनाम साक्षी धन गुरू टेऊँराम जी का गान करते हुए चल रहे थे. अपार जनसमूह के साथ आश्रम पर पहुंचने से पूर्व सतूगुरू टेऊँराम मार्ग का उद्घाटन कर आश्रम पहुंचे और हवन पूजा कार्य में सम्मिलित हुए,इसके पश्चात् वेदविधानपूर्वक श्री भगवान लक्ष्मीनारायण व आचार्य जी के स्वरूपों के साथ सर्वश्री सतूगुरू महाराज के अनुपम दर्शन पूजन कराया गया बाद में आरतीयां की गयीं. इस महोत्सव में संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज अजमेर से दोपहर काल पधारे. सांयकाल नीचे ऊपर सारा आश्रम खचाखच भरा था.सायंकालीन सत्संग सभा में सन्त संजय,श्रीमुक्त सन्त श्री प्रतापरायजी,सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानंदजी महाराज व गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज द्वारा अमृतवर्खा की गयी. आज चौथ की तिथि एवं पावन मंगलवार है. प्रेमियों के हृदय झूम रहे हैं. बड़ा भव्य आश्रम बनाया गया है.भक्तिरस की अमृतधारा प्रवाहित करते हुये सन्त प्रतापराय,सन्त हरिओमलाल ने **मुंहिंजो सतूगुरु स्वामी टेऊँराम आ खंड्रूअ वारो स्वामी टेऊँराम महाराज की जय मना लो** की धर्मधुनि से सारा सभागार झूम उठा, नर-नारी सुध-बुध भूल गये. दादो सांईं आसूराम साहब से लेकर आज तक के सन्तों का स्मरण किया गया.

२८ जनवरी- प्रातःकालीन सत्संग सभा का शुभारम्भ प्रार्थना गायन से हुआ,भगतमूलचंद के बाद में सन्त हरिओमलाल जी तत्पश्चात् श्री गुरू महाराज जी ने अमृत रसपान कराया. उसके बाद में कुछ दुकानों के महूरत कार्य सम्पन्न कराने के पश्चात् पुराने प्रेम प्रकाश आश्रम में सदूगुरू टेऊँराम कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र का श्री गणेश पूज्य स्वामी ब्रह्मानंदजी महाराज द्वारा वेद मंत्रो के उच्चारण के साथ श्री गुरू महाराजजी की पावन सानिध्यता में हुआ. उसी दिन आश्रम पर सामूहिक जनेऊ का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ जिसमें १३ बालकों को यज्ञोपवीत संस्कारित कर जनेऊ पहनाए गये.

सांयकालीन सत्संग सभा में जयपुर से दादी चेतादेवी अपनी महिला मण्डली के साथ,कल्याण से माता मीरादेवी,भाटापारा से दादी मोहिनी देवी एवं एटा से दादी धनीदेवी की शिष्या ने भी अमृत रसपान कराया,तत्पश्चात् श्री केवलराम(दिल्ली),सन्त प्रतापराय,सन्त जयदेवजी महाराज ने नाम की महिमा गायी. संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराजजी ने भजनानंद से प्रेमियों को ज्ञान देते हुए बताया-

अमरापुर खां आयो अमरापुर जो वासी

सदूगुरू टेऊँराम बणायो पंथु प्रेम प्रकाशी मां प्रेम प्रकाशी-प्रेम प्रकाशी

(१) *सदूगुरू टेऊँराम सभिनि खे प्रेमु सेखारियो,सेवा स्मरण सत्संग सच जो पाठु पढ़ायो कूड़ कपट खां करे किनारो,बिएं गुर चरननि वासी मां प्रेम प्रकाशी-प्रेम प्रकाशी.*

(२) *तन-मन-धन वाणीअ सां सभ खे सुखु पहुंचाए पर उपकार ही जीवन में जो लक्ष्य बण दयाधर्म ऐं चले कर्म सां अमरापुर खे वासी.*

(३) *प्रेम प्रकाशी मिठिड़ी बोली सभ सां बोले निंदा करे न भुतिजी कहिंजो वैर न र मानु छदे अपमानु सहे जो सदा रहे सुख वासी.*

(४) *काम क्रोध मद लोभ मोह खां करे किनारो, धर्म मर्यादा नीतीअ सां हले जीवन सा ज्ञानु पाए अज्ञानु हरे जो करे छदे चौरासी.*

(५) *ब्रह्मज्ञान खे पाए हरदमु बिए ब्रह्म निवासी पूरन पद खे पाए ब्रह्मानन्द जो आहे अविना सभ ज्योति पसे जो आहे घर-घर वासी*

जैसे मंदिर नया निर्माण हुआ है वैसे हम अपना चरित्र निमा करें,नित्य प्रति आवें,सत्संग सेवा नाम स्मरण में मन को लगावें,श्रेष्ठ गु को धारण करें. नाम की महिमा का गान करते हुये श्री गुरू महाराजजी सतूगुरू सांईं दिल मां शल नाम न तुंहिजो विसिरे का उच्चारण देते ह संकेत किया कि नाम का सुमरण नहीं किया मात्र गुरूदीक्षा से वह बात न होगी जो होनी चाहिऐ. गुरू शरण में आने के बाद भव रोगों को शमन जाता है.

२९ जनवरी- प्रातःकालीन सत्संग सभा में पाठों का पाराय कार्य सम्पन्न होने के बाद श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावन्दन किया गया तत्पश्च आयोजित आम भण्डारे में समस्त गोंदियावासियों ने सश्रद्धा पावन प्रस ग्रहण किया. समीपस्थ क्षेत्रों रायपुर, धमतरी, भाटापारा, भिलाई, भंडा तिरोड़ा, बालाघाट, सिवनी के सन्त झामनदास एवं स्पेन के श्यामलाल जानकीदेवी ने भी भाग लिया.

तिरोडा 30 जनवरी

प्रातःकाल ८ बजे गोंदिया से चलकर अमरापुर वाहन द्वारा ८: पर तिरोड़ा शहर में पहुंचे जहां शहनाई बैंडबाजों के साथ प्रेमी श्री देवनद के यहां भोजन-भजन का आनंद हुआ,पल्लव पाया तत्पश्चात् श्री भगवानद पुष्पादेवी दिपानी के घर पर निवास किया जिनके घर पर विशाल पंड सत्संग के लिए सजाया गया था,अपार जनसमूह ने दर्शन सत्संग का ल लिया. भक्त मूलचंद,सन्त नरेशलाल इन्दौर से,सन्त श्रीमुक्त,स हरिओमलालजी व गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराजजी ने अमृता की व सन्त श्री संजय कुमार द्वारा श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ पाठ साहब का पारायण किया गया. इसी सत्संग मध्य बच्चों द्वारा विशेष कार्यक्रम प्रस किया गया. दीपानी, गुंजन, छाया, अनु ३ से ५ साल तक की बच्चीयों द्व गुरू प्रार्थनाष्टक गायन से हाथमें आरती की थालियां लेकर नृत्य किया ग टीना इसके पश्चात् भजन गाया नृत्य किया आकाश ठाकुर, मोनू, जग ने सिर पर गेरू रंग की टोपी लगाते हुए नृत्य किया भजन था मेरे सत टेऊँराम तुम्हे बार-बार प्रणाम तत्पश्चात् स्वीता बुलचंदानी, प्रगति, नेहा, करि

ाचानी,हर्षा चदवानी,जया मेहरचंदानी बच्चीयों द्वारा इस भजन पर नृत्य किया
ाया-सन्त तव्हां सामींअड़ा अचु गुहिले घर आया

इस कार्यक्रम का निर्देशन कविता दीपानी द्वारा किया गया. पूज्य ्वामी जी के कर-कमलों द्वारा सभी बच्चों को पुरूस्कार दिया गया.

सायंकालीन ... सिन्धी कालोनी में किया गया,विशाल पंडाल ब्चाखच प्रेमियों से भरा था सत्संग किया. यहां सिन्धी समाज के ११० परिवार हते हैं उनमें से कई भक्त आचार्यश्री के शिष्य हैं. रात्रि प्रवास श्री ानवानदास के घर पर हुआ, प्रातः ८ बजे बालाघाट वाहन द्वारा रवाना हुये.

बालाघाट 31 जनवरी से 2 फरवरी

्रेम प्रकाश आश्रम का उद्घाटन व मूर्ति स्थापना समारोह सम्पन्न

आचार्यश्री सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा निःसृत ज्ञानगंगा वाहमान हो उठी बालाघाट के नवीन प्रेम प्रकाश आश्रम में. भक्तिरसधारा में ुबकी लगाने को आतुर बालाघाटवासीयों के अपारसमूह के मध्य आश्रम का द्घाटन व मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा इलाहाबाद के सन्त श्री महेश योगी के तृत्व में ब्राह्मणों द्वारा वेदविधिपूर्वक सम्पन्न करायी गयी. पंचदिवसीय समारोह े अतंर्गत गुरूवार २९ जनवरी को प्रातःकाल प्रार्थना के साथ सत्संगसभा की ुरूआत हुई,पाठों का आरम्भ सन्त श्री हरिओमलाल जी द्वारा कराया गया. त्पश्चात् पूजा व हवन का कार्यक्रम विधिवत दो दिवस तक रहा.

३१ जनवरी को प्रातःकाल सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज न्तमण्डली व प्रेमीयों सहित गोंदिया तिरोड़ा से चलकर बालाघाट पहुंचे, दयाकाश में उल्लासमयी प्रेम की घटाओं से परिपूर्ण प्रेमी सद्गुरू महाराज जी ी अगवानी के लिए बड़ी संख्या में नगरप्रवेश द्वार पर उपस्थित थे, इन्द्रदेव भी इस अवसर पर वर्षारूपी फूलों को बरसाया,परन्तु प्रेमीयों के प्रेम की ाधिकता का तो कहना ही क्या,वर्षा में भीगते हुए भी बैंडबाजो के साथ नाचते जन गाते आश्रम पर पहुंचे,मार्ग में ही वर्षा भी थम गयी. आश्रम पर हुंचकर त्रिदिवसीय हवन व पूजन कार्यक्रम की पूर्णाहुति में सम्मिलित हुए,इसी सम्पन्न होने के साथ सद्गुरू महाराजजी व संतमण्डल के पावन कर-कमलों ारा मूर्तियों का अनावरण करके दर्शन उपरांत सर्वप्रेमियों के लिए देव दर्शन द्वार खोल दिए गए. भगवान लक्ष्मी नारायण,राधाकृष्णजी,श्री झूलेलाल गवान के साथ आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरू स्वामी र्वानन्दजी महाराज,सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज, सद्गुरू स्वामी ेदासरामजी महाराज की मूर्तियों को प्राण प्रतिष्ठित किया गया. सभी प्रेमियों इस वेला मे दर्शन कर तालियों की झंकार से सारा आश्रम गुंजा दिया,आरती ने के उपरान्त पल्लव पाकर दोपहर १२:१५ बजे कार्यपूर्ण किया. इस अवसर रायपुर गोंदिया होते हुए पूज्यश्री स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज भी सम्मिलित तत्पश्चात् भोजन भण्डारे के साथ पंडितो को सेवा पूजन भेटा से सम्मानित विदाई दी गयी,महोत्सव के उपलक्ष में शाम को ४ बजे शोभायात्रा आश्रम निकाली गयी. फूलों से सजे हुए एक वाहन में सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के साथ पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज विराजमान होकर नगरनिवासियों प्रेमी-भक्तों को दर्शनानंद का अद्भुत आनंद दे रहे थे,चरणों में सन्त श्री हरिओमलालजी व संत दयाप्रकाशजी,भगत द्वारकादासजी बैटे हुए शोभा पा रहे थे. यह शोभायात्रा शहर के मुख्य स्थानों बाजारों से होती हुए ६:४५ बजे आश्रम पहुंचकर विसर्जित हुई.

१ फरवरी- आज प्रातःकाल ८ से १० बजे तक सत्संग होने के पश्चात् सामूहिक जनेऊसंस्कार कार्य भी सम्पन्न हुआ,एकादशी पर्व पर सुविधिवत देवपूजन के साथ ८४ बच्चों को यज्ञोपवीत से संस्कारित करते हुए जनेऊ धारण कराये गये,सद्गुरू महाराज सन्तो द्वारा जीवन प्रेरक शिक्षाओं से उन्हें शिक्षित किया गया,अन्त में शाल व शर्टपीस सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व सन्त श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज द्वारा पाखर स्वरूप दी गयी तत्पश्चात् आगन्तुक बच्चों व परिजनों को भोजन भण्डारा श्री झूलेलाल धर्मशाला में कराया गया. प्रेम प्रकाश आश्रम की व्यवस्था कार्य आचार्य कृपा से श्री राजलदास,ब्रजलाल,विजयकुमार,कौड़ामल इत्यादि प्रेमियों व माताओं द्वारा किया जाता है. प्रातःकाल आरती व सत्संग की रसधारा सदैव यहां बहती रहती है. भक्त मूलचन्द द्वारा गाया गया भजन-

थल:-दूलह दरियाह शाह खिल्लूअ खे रखिजि सम्भारे

(1) खिलू आयो आ नदीअ किनारे बुढ़ी वयो सो जलधि मंझारे
हीणनि जा हमिराह..................................खिलूअ

(2) कपड़नि सूधो टुबी दिनाऊं वरूण देव जो दर्श क्याऊं
मित्यो प्रेमु अथाहु..............................खिलूअ

(3) बालक खे वठी सतगुरू आयो खिलूअ सभोई हालु सुणायो
कामिल मर्द मल्लाह..............................खिलूअ

(4) महिमां गुरूअ जी कहिड़ी मायां चरननि में नितु सीसु निवायां
शाहनि जो तू आहे शाहु..............................खिलूअ

२ फरवरी-बालाघाट प्रेम प्रकाश आश्रम उद्घाटन व मूर्ति स्थापना समारोह के आज अंतिम दिवस पर प्रातःकाल ९ बजे सत्संग का कार्यक्रम आरंभ हुआ जिसमें सन्त श्री संजय कुमार ने भजन के आनन्द से सारी संगति को भाव विभोर किया इसी बीच सन्त नरेशलाल इन्दौर व कटनी से पधारे सन्त रमेशलाल ने २० मिनट के अन्दर सुन्दर भजन गाये तत्पश्चात् पाठों का भोग कार्य सम्पन्न हुआ. आरतीयां होकर १२ बजे श्री गुरूवर ने पल्लव पाया तत्पश्चात् आम भंडारा हुआ जिसमें हजारों भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया.

सांयकालीन समापन सत्संगसभा ५ बजे शुरू हुई,आज पल्लव का दिन,सत्संग सभागार नीचे ऊपर प्रेमियों से खचाखच भरा था. सिन्धी कालोनी में स्थापित प्रेम प्रकाश आश्रम बालाघाट सिन्धी समाज के लिये तीर्थ स्थल बन गया है. इस सत्संग के आखिरी पल्लव के दिन सन्त श्रीमुक्त,भक्त मूलचन्द, सन्त हरिओमलाल व पूज्य सद्गुरू महाराजजी ने सारी संगति को सम्बोधित करते हुए कहा कि सेवा सत्संग नाम स्मरण माध्यम से यह जीवन

भक्ति मार्ग से ईश्वर तक पहुंच जाता है, अंत में पल्लव पाकर महोत्सव का समापन हुआ. पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज बालाघाट के प्रेमियों को भगवन्नाम की महिमा बताते हुए कह रहे हैं-

हरि मेली है सन्त जन हरि से देत मिलाय
कह टेऊँ छोड़त नहीं जो जन शरणी आय

आचार्य सद्गुरू टेऊँरामजी महाराज वाणी द्वारा सदुपदेश देते हैं कि ऐसे गुरू की शरणागती जीव को चाहिये जो भवसागर से पार करे और जीव गुरूजनों की सेवा आत्मकल्याण भाव से करे.

सुत दारा और लक्ष्मी पापी को भी होय,
सन्त समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ दोय,

संसार के पदार्थ प्रारब्ध अनुसार प्राप्त होते हैं. महापुरूषों का संग ईश्वर की कथा सत्संग मिल जावे यह दुर्लभ है. सत्संग में जाकर लगन लग जावे. मन को समझाने व मोड़ने का साधन है सत्संग.

वसी जोगी वेठो झंग में,संगी साथी न कोई संग में
रूह रंगिजी वयी राम रंग में,हुई ओहम सोहम धुनी अंग में
मिठो नालो स्वामी टेऊँराम जो

यह जीव संसार में अकेला आया व जायेगा अकेला,यहां आकर इनको अपना संगी साथी समझ बैठा है परन्तु दुख के समय अन्त में यह अनुभव होता है. महापुरूषों की वाणी हमें जगाती है कि जहां-जहां मन की वृत्ति फसी है वहां से अन्त में दुख ही मिलता है अतः मन को नाम में ही लगावें परमात्मा सद्गुरू चरणों में प्रार्थना करके सद्बुद्धि सुमति मांगे.

पारस जींअ से साधु कनि था लोह खे कंचन
ताव दुई वचननि जा कनि था मन खे मञ्जन
बुधी पैगामु प्रियनि जो वयड़ो मूंखे वणी

सन्त महात्मा परमात्मा का पैगाम देकर संसार के जीवों को जगाते हैं कि मंजिल दूर अपने घरको जाना है साथी सारे चले गये तुम्हें भी चलना है-

बाबा दादा कादे वयड़ा धरतीअ अन्दरि दाखिल थियड़ा
जीजलि पवन्दी वञे चलि चलि जे झलीं
तबी वेन्दुसि ओदाहुं अमां दे खुशियां मोकल

विवेक दृष्टि से देखा शरीर संसार नाशवान परमात्मा सत्य को अन्तर दृष्टि करते अनुभव किया एकान्त में अपने मन को बचपन से लगाया.

कटंगी 3 फरवरी

बालाघाट आश्रम का उद्घाटन मूर्ति स्थापना का कार्यक्रम पूर्णकर प्रातःकाल ७:१५ पर अमरापुर वाहन द्वारा बालाघाट जिले का एक छोटा सा शहर कंटगी,जिस जगह सिन्धी समाज के लगभग ३०-४० परिवार निवासरत हैं. छोटे से गुरूनानक दरबार के बाहर लगे सत्संग पंडाल में सत्संग का कार्य हुआ,जहां पर सन्त नरेशलाल,माता श्री चेतादादी जयपुर निवासी ने अपनी मंडली सहित भजन-कीर्तन किया इसके पश्चात् गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज द्वारा सत्संग अमृतवर्षा करते हुऐ बताया गया कि मनुष्य जन्म की मौज यह बार बार जीव को नहीं मिलेगी अतः नाम स्मरण हमेशा करते हुए अपने मन को विषयों की ओर न मोड़कर ईश्वर की ओर जोड़कर अपना कल्याण करें.

सिवनी 3 से 5 फरवरी

मंगलमयी सद्गुरू टेऊँराम ज्ञानगंगा का अमृतपान अब सिवनीवासियों के लिए भी सुलभ हो गया है. यहां के भक्तों की चिर अभिलाषा पूर्ण हुई आचार्यश्री की कृपा से पूज्य सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानंदजी महाराज, संत हरिओमलाल, संत दयाप्रकाशजी, संत लालूराम (दिल्ली) के पावन सानिध्य में.

प्रेम प्रकाश आश्रम के उद्घाटन व मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा का पंचदिवसीय महोत्सव व त्रिदिवसीय हवन पूजन उत्सव १ फरवरी को प्रातः सन्त नरेशलालजी द्वारा पाठ आरंभ के साथ शुरू हुआ, इसके पश्चात् काशी के प्रकाण्ड विद्वान ब्राह्मणों द्वारा हवन पूजन कार्यक्रम भी आज से प्रारंभ हुआ. प्रातः सायं सत्संग की अमृतधारा का पान भी प्रेमियों ने श्रद्धा उमंग के साथ किया. २ फरवरी को पूज्य स्वामी ब्रह्मानंदजी महाराज का सिवनी पहुंचने पर हार्दिक स्वागत किया गया, स्वामीजी आज इन्द्र बंसीलाल गुरनानी के पुत्रके विवाह समारोहमें संतों के साथ सम्मिलित हुए.

३ फरवरी- कटंगी (बालाघाट) से सिवनी प्रातः ११ बजे पहुंचने पर नगर प्रवेशद्वार के पास ही प्रेमियों श्रद्धालुओं की भारी भीड़ ने भारी हर्षध्वनि से आतिशबाजी फोड़कर एवं पुष्पवर्षा कर सद्गुरू महाराजी का हार्दिक अभिनंदन किया. सुगधिंत फूलों से सजे हुए वाहन पर पूज्य सद्गुरू महाराजजी व अन्य संतो को बिठाया गया था, मार्ग में पुष्पवर्षा के साथ सद्गुरू महाराज जी का स्वागत बड़े जोश के साथ किया.

धर्मसम्राट स्वामी करपात्रीजी महाराज के शिष्य काशी के प्रकाण्ड ब्राह्मणों द्वारा वेदोक्त मंत्रो के उच्चस्वर गायन के मध्य सद्गुरू महाराज जी व संतमण्डल ने रिबन काटकर दोपहर १२ बजे आश्रम परिसर में प्रवेश किया. हवन पूजन कार्य की पूर्णाहुति के साथ मूर्ति पूजन दर्शन किया गया प्रातःसायं सत्संग सभाओं में सिवनी के अतिरिक्त छत्तीसगढ़,मध्यप्रदेश,महाराष्ट्र राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से आये प्रेमियों ने भी अमृतपान किया.

५ फरवरी को प्रातः पाठों का भोग, ध्वजावंदन व आम भंडारे का कार्यक्रम हुआ, जिसमें हजारों भक्तजनों ने उत्साह के साथ भाग लिया सायंकालीन सत्संग सभा के बाद सद्गुरू महाराजजी ने पल्लव पाकर महोत्सव का समापन किया.

समाचार दर्पण

गुरुदेव तुम्हारी जय होवे–टेऊँराम तुम्हारी जय होवे

बसन्तोत्सव पर पीतवस्त्रों से सजी गुरु महाराज की मनभावन प्रतिमाएं

जयपुर- प्रकृति की अनुपम अद्‌भुत छटा को देखकर कौन विस्मित नहीं होता. गगन आकाश, ब्रह्माण्ड, तारे, सूर्य, चन्द्रमा, बीज से उत्पन्न वृक्ष आदि. जिसे भगवान की अद्‌भुत शक्ति ही कह सकते हैं. स्वतः ही सभी का संचार हो रहा है. ऐसी ही प्रकृति की अनुपम धरोहर है बसन्त ऋतु. चहुं ओर हरि-हरि हरियाली, पीली साड़ी ओढ़े खड़ी सरसों, नन्हें-नन्हें पोधे वृक्षों की कोपल, अमराइयों में बैठी कोयल की मधुर कूक, तितलियों का झुण्ड, बगियों में भवरों का मंड़राना, ठण्डी मीठी-मीठी सर्द हवाएं, चारों ओर ऋतुराज बसन्त के आने का सन्देश देती है.

ऐसे ऋतुराज बसन्तोत्सव को २६ जनवरी २००४ सोमवार को पावन श्री अमरापुर स्थान जयपुर में प्रातः ७ से १० बजे तक प्रार्थना सत्संग आरती, कुंुं, केसर, गुलाल, तिलक आदि. द्वारा पूजन करके मनाया गया. आज श्री गुरू दरबार को बड़े ही मनमोहक पीत अलंकारो से सुसज्जित कर सजाया गया था. मुख्यद्वार पर आकर्षक सतरंगी रंगोली, प्रतिमाओं का पीत वस्त्र धारण, समाधि स्थल में पीले सुन्दर पुष्पों का श्रृंगार व सन्तों-भक्तों द्वारा महाराज श्री की प्रतिमाओं का कुंुं-केसर-गुलाल तिलक से विशेष पूजन किया गया. इसी उत्सव में सद्‌गुरू सर्वानन्दजी महाराज जी बसन्त ऋतु रंगवारी रे प्रवचन कैसेट चलाई गयी जिसमें महाराज श्री ने बसन्त महिमा के बारे में बताया कि इस ऋतु में २-३ मील पैदल चलना चाहिए हो सके तो घर से चलकर सीधे अमरापुर धाम आओ, जहां सत्संग भी सुनो व शरीर को निरोगी भी बनाओ. इसी प्रकार सभी सन्तो ने बसन्त की महिमा गाकर बड़े श्रद्धा हर्षोल्लास के साथ बसन्तोत्सव मनाया.

दीपक मनवानी, जयपुर से

अमरापुर संत मण्डली द्वारा ब्यावर में सत्संग वर्खा

परम श्रद्धेय सद्‌गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज की शिष्या माता हैजीबाई (दादी रूक्कीमां) की प्रथम पुण्यतिथि समारोह १६ जनवरी से २० जनवरी २००४ तक हाउसिंग बोर्ड स्थित ब्यावर आश्रम में माता कमलादेवी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ. इस पुण्यतिथि पर १६ जनवरी को संत भोलानाथ प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर द्वारा प्रेम प्रकाशग्रंथ पाठ का आरंभ किया गया. २० जनवरी को अमरापुर स्थान जयपुर से संत मोनूरामजी संतमण्डली के साथ प्रातः १० बजे हाउसिंग बोर्ड आश्रम ब्यावर में पधारे. प्रातःकाल ११ बजे पाठों का भोग सम्पन्न हुआ उसके पश्चात्‌ अमरापुर स्थान से पधारे संतमण्डली संत मोनूरामजी ,संत राजा प्रेमप्रकाशी, संत जय प्रेमप्रकाशी, संत ढालूरामजी, संत झामनदास (भीलवाड़ा) ने उपस्थित प्रेमियों को सत्संगामृत से सराबोर कर दिया. दोपहर ३ बजे माता सतीदेवी किशनगंज ब्यावर आश्रम में संतमण्डली द्वारा सत्संग किया एवं सांय ४ से ७ बजे तक प्रेम प्रकाश आश्रम नन्दनगर ब्यावर में अमरापुर संतमण्डली द्वारा सत्संगवर्खा करके भक्तजनों को तृप्त किया गया. यहां पर प्रेम प्रकाश आश्रम ट्रस्ट व संत भोलाराम प्रेमप्रकाशी द्वारा संतमण्डली का स्वागत किया गया. सायं ८ बजे प्रेम प्रकाश आश्रम नन्दनगर ब्यावर में उपस्थित हजारों प्रेमियों को गुरू महाराज का आशीर्वाद प्रदान कर पल्लव पाकर संतमण्डली ने जयपुर के लिए प्रस्थान किया.

मोहन शिवनानी (अजमेर) ब्यावर से

भाटापारा में प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा 101 निःशुल्क नेत्र ऑपरेशन

प्रेम प्रकाश मंडल भाटापारा द्वारा आयोजित ११वां नेत्र शिविर जिसमें ४०० मरीजों का परीक्षण कर १०१ नेत्र रोगियों को आपरेशन द्वारा लेंस प्रत्यारोपण डॉ. राजेश अवस्थी, डॉ. श्रीमती एस.धागम्बर, डॉ. प्रवीण शर्मा द्वारा किये गये. शिविर का समापन समारोह प्रेम प्रकाश मंदिर में संस्था के पंचम गद्‌दीनशीन सत्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ. यह पहला अवसर था जिसमें लेंस प्रत्यारोपण के द्वारा यह महायज्ञ सम्पन्न हुआ. कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दयालदास गोइंदानी (अध्यक्ष सेंट्रल सिंधी पंचायत) के द्वारा की गई. इस कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष सत्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज,विशेष अतिथि श्री भगवानदेव ईसरानी रायपुर (सचिव-छत्तीसगढ़ विधानसभा) व श्री मुरलीधर माखीजा कोरबा (अध्यक्ष-प्रांतीय सिंधुसभा) उपस्थित थे. इस कार्यक्रम में श्री शिवरतन शर्मा (पूर्व विधायक), श्री हजारीलाल छाबड़िया (महासचिव सिन्धी सेन्ट्रल पंचायत), श्री घुम्मणमल गेहाणी, शत्रुघ्नलाल पारप्यानी (अध्यक्ष अमरापुर नवयुवकमंडल) एवं सभी प्रेमप्रकाशी सदस्य उपस्थित थे. प्रेम प्रकाश मंडल भाटापारा द्वारा नेत्र शिविर, बवासीर शिविर, रक्तदान शिविर, योग शिविर, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, निराश्रित परिवारों को प्रतिमाह अन्न दान, गरीब परिवारों को आर्थिक रूप से मदद और गर्मी में रेल्वे स्टेशन पर ट्रेनों में यात्रियों के लिए शीतल जल के निःशुल्क पाऊच वितरण आदि सेवा कार्यो की जानकारी भाटापारा प्रेम प्रकाश मंडल के अध्यक्ष डॉ. वासुदेव ठाकुर ने दी.

आत्माराम गोइंदानी प्रेमप्रकाशी भाटापारा से

विद्यार्थी विशेष

विद्यार्थी के लिये विद्या से बढ़कर भक्ति नहीं

काग चेष्टा, बको ध्यानम्-श्वास निद्रा तथैव च
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंचलक्षणम्

विद्यार्थीयों के लिये कहा जाता है कि उनमें ये पांच गुण होने चाहिएं-

- काग यानि कौए की तरह प्रयासरत चेष्टावान होना चाहिए.
- बको यानि बगुलेकी तरह एकाग्रता रखे,विद्याके प्रति ध्यानमग्न होना चाहिए.
- कुत्ते की तरह चौकन्नी नींद हो, पढ़ाई के प्रति सतर्क होना.
- अल्प खाना (भोजन कम से कम खाना).
- बिल्कुल एकान्त व सुख सुविधाओं का आदी नहीं होना चाहिए.

अतः विद्यार्थी जीवन में विद्या से बढ़कर कोई भक्ति नहीं. प्रत्येक विद्यार्थी को उल्लास उमंग व एकाग्रता से मन लगाकर पढ़ाई करनी चाहिये. जिससे उसे सफलता मिलेगी.

साधक- अमरापुर स्थान जयपुर

श्री अमरापुरधाम जयपुर में होली महोत्सव

होली महोत्सव

7 मार्च 2004 रविवार

कार्यक्रम विशेष

प्रातः ७ से १० बजे तक

प्रार्थना, सत्संग, पूज्य महाराजश्री की प्रवचन कैसेट, रंग गुलाल से प्रतिमाओं का पूजन व समाधी स्थल का पुष्पों से श्रृंगार आदि का आयोजन होगा.

कुम्भ मेला अंक (प्राचीन कुम्भ मेला स्मृति शेष)

प्रेम प्रकाश सन्देश का अप्रैल २००४ का अंक उज्जयिनी कुम्भ महापर्व पर कुम्भ मेला स्मृति शेष के रूप में प्रकाशित होगा. इस अंक में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा लगाये गये कुम्भ मेला छावनियों (अन्न क्षेत्र) की अविस्मरणीय स्मृतियो को सहेजा जायेगा.

१. आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज से लेकर आजतक के कुम्भमेला छावनियों की जानकारी.
२. कुम्भ मेले में पूज्य संत महात्माओं का पावन सानिध्य पाकर उनके दिव्यतम वचनों को कितना आत्मसात किया है हमने.
३. कुम्भ मेले जैसे आयोजनों से किस प्रकार हम अपना जीवन सार्थक कर सकते हैं.
४. कुम्भ मेले में केवल कुम्भ स्नान से ही क्या मोक्ष सम्भव है.
५. कुम्भ मेले से जुड़ी अविस्मरणीय स्मृतियां

अतः आप सभी पूज्य सन्त-महापुरूषों, विद्वानों, प्रेमियों से करबद्ध प्रार्थना है कि कुम्भ मेला छावनियों के बारे में प्रेरणादायी स्मृतियों को हिन्दी मे लिखकर अथवा टाईप कराकर हमें १५ मार्च के पूर्व भिजवाने की कृपा करेंगे इसी विश्वास के साथ.

सम्पादक

नम्र निवेदन

आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज कृत प्रेम प्रकाश मण्डल से सम्बन्धित साहित्य, आध्यात्मिक कथा प्रसंगो व वेद-पुराण वाणी को गत २४ वर्षों से निरन्तर आपकी सेवा में प्रेम प्रकाश सन्देश द्वारा आचार्य श्री की असीम कृपा से पूज्य सद्गुरू महाराजजी, पूज्य सन्तमण्डल, विद्वत्‌जन, भक्तजनों के सहयोग व आशीर्वाद से प्रस्तुत करने का प्रयास निमित मात्र किया जा रहा है.

पाठकों के एक बड़े वर्ग के सुझावों के अनुरूप जनवरी २००४ से प्रेम प्रकाश सन्देश की रूपरेखा में परिवर्तन करने का प्रयास जारी है. इसी कड़ी के अन्तर्गत आध्यात्मिक वर्ग पहेली की श्रृंखला शुरू की जा चुकी है. इस अंक से आचार्यश्री के जीवन लीलाओं को चित्रकथा के माध्यम से दर्शाया जा रहा है. इसकी भी श्रृंखला धारावाहिक रूप में प्रतिमाह प्रकाशित किये जाने का प्रयास रहेगा. आध्यात्मिक प्रश्नोत्तर भी इस अंक से क्रमबद्ध रूप से प्रतिमाह प्रकाशित किये जाने की योजना है, जिनके उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे इसके अतिरिक्त शीघ्र ही और नयी प्रस्तुतियां की जावेंगी. इस सम्बन्ध में आपके विचार हमारे लिये प्रेरणा का कार्य करेंगे. आपके सुझाव आमंत्रित है. हम सुश्री सुधा जौहरी जी को भी सद्गुरू महाराज जी की ओर से साधुवाद देते हुए आशा करते हैं कि उनके द्वारा वर्गपहेली चित्रकथा का चित्रांकन लेखन की सेवाऐं निरन्तर प्रेम प्रकाश सन्देश को प्राप्त होती रहेगीं.

सम्पादक

क्या आप जानते हैं? **आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-1**

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल से संबंधित प्रश्न

१. श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक कौन थे?
२. मण्डल की आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का नाम व प्रकाशन स्थान क्या है?
३. श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय आश्रम कहाँ स्थित है?
४. आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज का पावन जन्मदिवस कौन-सा है?
५. आचार्यश्री द्वारा दिया गया महामंत्र क्या है?
६. सद्गुरू टेऊँराम गौशाला कहाँ स्थित है?
७. आचार्यश्री द्वारा रचित ग्रंथ का नाम क्या है?
८. सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म किस प्रदेश व गाँव में हुआ था?
९. सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज के गुरू का क्या नाम था?
१०.सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने पंचायत के साथ मिलकर सिन्धुनदी पर कौनसी प्रार्थना की?

-उत्तर अगले अंक में देखें

श्री अमरापुर स्थान जयपुर

समय सारणी 15 फरवरी से प्रभावशील

मन्दिर खुलने का समय

सुबह : 6.00 बजे से 12.00 बजे तक

सायं : 3.00 बजे से 9.00 बजे तक

प्रतिदिन सत्संग का समय

सुबह : 7.00 बजे से 8.20 बजे तक

सायं : 4.30 बजे से 6.00 बजे तक

प्रत्येक रविवार

सुबह : 7.00 बजे से 9.30 बजे तक सत्संग-प्रवचन कैसेट

सायं : 4.30 बजे से 6.00 बजे तक सत्संग-भजन

आरती

सायं : 6.00 बजे से 6.20 बजे तक

प्रत्येक गुरुवार व शनिवार

सुबह : 7.00 बजे से 8.30 बजे तक सत्संग-गुरू प्रार्थनाष्टक पाठ

सायं : 4.30 बजे से 6.30 बजे तक भजन संध्या-आरती

सत्नाम साक्षी मंत्र का जाप, समाधि स्थल पर पुष्प झांकी दर्शन

झांकी दर्शन समय

सायं : 5.00 बजे से 9.00 बजे तक

नोटः दोपहर १२ बजे से ३ बजे तक मुख्य द्वार व श्री मन्दिर बंद रहेगा

आत्म चिंतन

आईना

वैसे तो आईना सजने संवरने के काम आता है, कुछ लोगों का वक्त तो आईने के सामने ही गुजरता है. इसके सामने खड़े होकर हम अपना चेहरा देखते हैं, संवारते हैं. औरतें मेकअप में अपना समय गंवाती है लेकिन आईने के सामने खड़े होकर अपने जीवन की सच्चाई आज तक किसी ने समझने की कोशिश नहीं की. आईये हम इस पर शोध करें व इसकी सच्चाई समझने की कोशिश करें.

१. आईने के सामने खड़े रहकर (बिना पलक झपकाए) अपने चेहरे को पांच मिनिट तक देखते रहिये अगर आप अपना चेहरा फूल सा खिला-खिला महसूस कर रहे हैं या कर रही हैं तो समझना चाहिये कि आपका मन साफ है,आप निर्दोष हैं. अगर आप अपना चेहरा अपलक देख नहीं सकते या आपके चेहरे पर क्रोधके भाव आ रहे हैं और आप इधर-उधर देखने लगते हैं तो समझना चाहिए कि आपके मनमें चोर है और आप में कुछ खोट है.

२ आईने के सामने खड़े रहकर अपने बीते समय के बारे में याद कीजिये अगर आपने अच्छे कर्म किए हैं तो आपके चेहरे पर संतोष के भाव स्पष्ट नजर आयेंगे और आपने अच्छे कर्म नहीं किए तो अपने चेहरे पर पसीने की बूंदे भी आप देख सकते है, और यह भी हो सकता है कि आप पसीना पोंछते नजर आएं, अगर उस वक्त किसी ने आपको आवाज दे दी तो यकीन जानिये आप एकदम हड़बड़ाते नजर आएंगे, है न कमाल की चीज आईना हकीकत सामने ला देता है.

३. किसी अपराधी प्रवृत्ति के इन्सान को आईने के सामने खड़ा कर दीजिये और उसे बाध्य कीजिये कि वह आईना ही देखता रहे, आप यकीन जानिये कि वह आदमी वहांसे भाग जायेगा या फिर गुस्सेमें आकर आईना तोड़ देगा.

४. किसी को छुपकर देखियें कि वह अकेले में आईने के सामने क्या-क्या करता है, अगर वह अपना चेहरा आईने में देखकर तरह-तरह के मुंह बनाता है, अपने आप से हंसी मजाक के हावभाव चेहरे पर लाता है तो समझना चाहिये कि वह इन्सान सच्चा व सीधा है, अगर वह इन्सान आईने के सामने गुस्से का इजहार करता है तो उसके हावभाव, लड़ाई झगड़े के हैं तो समझना चाहिये कि वह इन्सान नहीं शैतान है, उसकी प्रवृत्ति झगड़ालू व्यक्ति की है.

आप स्वयं को आईने में पांच मिनिट अपलक देखकर अपने आपको समझने का प्रयास कर सकते हैं और अपने आप में कुछ खोट नजर आए तो आप अपने आप में सुधार ला सकते हैं, बस थोड़ी सी अक्ल लगाने की जरूरत है.

बड़े-बूढ़े हमेशा यह कहावत कहते रहते हैं कि **इसे जरा आईना तो बताना** कहने का तात्पर्य यह है कि आईना हमारी सिर्फ तस्वीर ही नहीं बताता बल्कि हमारे मन में छुपे चोर से भी हमें अवगत कराता है.**वाह क्या चीज है आईना.** -वासुदेव भेरवानी, उदयपुर

साईं बाबा टेऊँराम लीला चित्रकथा-१

चित्राकंन–लेखन–सुधा जौहरी, जयपुर



दिमागी कसरत

ाध्यात्मिक वर्ग पहेली क्रं.- 4

		2		ॐ	3		4
	ॐ		ॐ	5		ॐ	
	ॐ	6		ॐ	7	8	
	ॐ	ॐ	ॐ	9			ॐ
ॐ	10	11		ॐ		ॐ	12
3			ॐ	ॐ	14		
5		ॐ	16			ॐ	
ॐ		ॐ		ॐ		ॐ	

ाध्यात्मिक वर्ग पहेली - 3 का सही हल

स	2 त	3 ना	म	सा	4 क्षी	ॐ	5 स
म	म	ता	ॐ	ॐ	7 र	स	ना
द	ॐ	ॐ	8 ध	ॐ	सा	ॐ	त
र्शी	ॐ	9 क	र्म	यो	ग	ॐ	न
ॐ	10 सि	न्ध	ॐ	ॐ	11 र	12 वि	ॐ
3 पा	ॐ	ॐ	14 चि	ॐ	ॐ	15 मु	क्ति
र	ॐ	16 स	न्त	ॐ	17 सी	ख	ॐ
3 स	च्चि	दा	न	न्द	ॐ	19 ता	त

ही हल भेजनें वालों के नाम-
टापारा से-आत्माराम गोइन्दानी,सिवनी से-दीपा रामचंद माखीजा,श्रीमती विमला गुरनानी,रेनू श्यामसुंदर
ख़ीजा,इन्द्रा बंसीलाल गुरनानी,मनोज गुरनानी,दीपा मोहनानी,पुष्पा मोहनानी,खेरथल से-हेमलता,शालू
रेजा,जयपुर से-म:ादेवी दिलवानी,दीपक मनवानी,धमतरी से-सुरेश व श्रीमती लक्ष्मीदेवी पंजवानी,कामठी
रवि मुलानी.

आध्यात्मिक वर्ग पहेली - ४

बाएं से दाएं :

१. क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित पावन नगरी,कुंभ मेला स्थान,ज्योर्तिलिंग तीर्थ.(४)
३. सतों के जीवन के ....प्रसंग जन साधारण का मार्ग दर्शन करके उत्साहित करते हैं,(३)
५. जिसने यह नाम जपा वह भवसागर तर गया., दशरथ के पुत्र, मां सीता के पति. (२)
६. दैहिक,दैविक व भैतिक ....से भी ऊपर है ब्रह्मानन्द,जो नित्य प्रकाश विभु,दुख का पर्याय.(२)
७. अहम् गर्व का ..... है., चिन्ह,.(३)
९. संत टेऊँराम जी ने पिता के स्वर्गवास के पश्चात् इसे संभाला.(३)
१०. ..... करना व सहना दोंनो ही गलत है मतसी का उल्टा.(३)
१३. भारत विश्व .....(भाईचारे) की भावना में विश्वास रखता है.(३)
१४. जिसके ज्ञान चक्षु न खुले वह कूप ..... ही रहा, मेंढक.(३)
१५. सबसे पालनहार प्रभु ..... दयालु व ..... हितकारी हैं,दयाल विरद संभारी, अनाथ. (२)
१६. यशोदा मैयाने कृष्ण का मुख खोला तो उसमें अखिल...समाया हुआ था.(३)

ऊपर से नीचे :

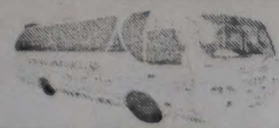
१. मंत्र का सही... करने पर ही उसका फल मिलता है. (४)
२. ज्ञान पिपासु ; जिज्ञासु . (३)
३. संत टेऊँराम जी द्वारा स्थापित सबको स्नेह सूत्र में बाँध कर आलोक दर्शाने वाला पंथ.(२.३.३.)
४. कांटे, जो हर सत्य की राह पर चलने वाले के चुभते हैं. (३)
८. ब्रह्मा रचित लोकों की संख्या दो के बाद वाली संख्या. (२)
१०. संत टेऊँराम जी की जन्मस्थली खण्डू, इसी के तट पर है . (२.२)
११. मरणोपरान्त शरीर पंच ... में विलीन हो जाता है. (२)
१२. तार वाद्य जिसे बजाकर संत टेऊँराम जी भजन गाते थे. (४)
१३.नेकी के विपरीत अर्थ वाला शब्द. (२)
१६.संसार की रचना करने वाले, तीन देवों के प्रथम देवता. (२)

प्रस्तुति: सुधा जौहरी, तिलकनगर, जयपुर

सही हल आगामी अंक में देखें -

सही हल भेजने वालो के नाम आगामी अंक मे प्रकाशित किये जाऐगें. सही हल के लिए वर्ग पहेली की छायाप्रति (फोटोकॉपी) करवाकर अथवा इसी पर भरकर ५ मार्च तक कार्यालय में भिजवायें.

पता :
प्रेम प्रकाश संदेश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर - ४७४००१



श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

16 फरवरी से 19 फरवरी	2004 तक	ग्वालियर	☎ 0751–2426111
20 फरवरी से 22 फरवरी	2004 तक	डबरा	☎ 07524–223245
23 फरवरी	2004	दतिया, झाँसी	☎ 094140–41864, 098290–14850
24 फरवरी से 26 फरवरी	2004 तक	मुरैना	☎ 07532–230280, 094251–26280
27 फरवरी से 29 फरवरी	2004 तक	आगरा	☎ 0562–2211499
1 मार्च से 2 मार्च	2004 तक	अलीगढ़	☎ 0571–2420591
3 मार्च से 10 मार्च	2004 तक	हरिद्वार	☎ 01334–260144, 260815
11 मार्च से 14 मार्च	2004 तक	दिल्ली	☎ 011–23969774, 23942126
15 मार्च से 19 मार्च	2004 तक	गाँधीधाम	☎ 02836–231612, 220320
20 मार्च	2004	यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
21 मार्च से 26 मार्च	2004 तक	जयपुर	☎ 0141–2372424, 2372423
27 मार्च से 31 मार्च	2004 तक	दिल्ली	☎ 011–23969774, 23942126
2 अप्रैल से 4 अप्रैल	2004 तक	रतलाम	☎ 07412–240229, 243471
5 अप्रैल से 7 अप्रैल	2004 तक	उज्जैन	☎ 094140–41864, 098290–14850
8 अप्रैल से 12 अप्रैल	2004 तक	इन्दौर	☎ 0731–2468140
13 अप्रैल से 5 मई	2004 तक	उज्जैन	☎ 094140–41864, 098290–14850
6 मई	2004	यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
7 मई से 8 मई	2004 तक	फैजाबाद	☎ 05278–246159
9 मई से 11 मई	2004 तक	वाराणसी	☎ 0542–225585
12 मई से 13 मई	2004 तक	इलाहाबाद	☎ 0532–2655214
14 मई से 16 मई	2004 तक	कानपुर	☎ 0512–2215747
17 मई से 18 मई	2004 तक	लखनऊ	☎ 0522–2211901
19 मई	2004	दिल्ली	☎ 011–23969774, 23942126
20 मई से 23 मई	2004 तक	अजमेर	☎ 0145–2441850, 2440279

तीज–त्योहार

१६ फरवरी २००४	सोमवार	विजया एकादशी व्रत
१८ फरवरी २००४	बुधवार	महाशिवरात्रि व्रत, स्वामी गणेशानन्द जयंती
२० फरवरी २००४	शुक्रवार	अमावस्या
२१ फरवरी २००४	शनिवार	चन्द्रदर्शन
२४ फरवरी २००४	मंगलवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२५ फरवरी २००४	बुधवार	सद्गुरू टेऊँराम चौथ
३ मार्च २००४	बुधवार	आमला एकादशी व्रत
६ मार्च २००४	शनिवार	होलिका दहन, सत्यनारायण-पूर्णिमा व्रत
७ मार्च २००४	रविवार	धुलेन्डी, छारंडी
१० मार्च २००४	बुधवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
११ मार्च २००४	गुरूवार	श्री रंगपंचमी उत्सव
१४ मार्च २००४	रविवार	मीन संक्रांति
१७ मार्च २००४	बुधवार	पापमोचनी एकादशी व्रत
२० मार्च २००४	शनिवार	अमावस्या
२१ मार्च २००४	रविवार	गुड़ी पड़वा, चैत्र नवरात्रा शुरू
२२ मार्च २००४	सोमवार	चन्द्रदर्शन, चेट्री चंड, झूलेलाल जयंती
२६ मार्च २००४	शुक्रवार	सद्गुरू टेऊँराम चौथ

नवरात्रा व्रत महिमा

भारतवर्ष में शक्ति की आराधना के लिए नवरात्र का प्रचलन है.भारतीय नववर्ष का मान आज ही के दिन से प्रारंभ होता है.यहां पर प्रचलित नवरात्र (१) वासन्तीय (२) शारदीय नाम से जाना जाता है.वासन्तीय नवरात्र चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होता है इसे राम नवरात्र भी कहते हैं. नया संवतसर आज ही के दिन से प्रारंभ होता है.इसी दिन ब्रह्माजी ने संपूर्ण जगत की रचना की है.इस दिन जो वार होगा वही वर्ष का राजा कहलाता है.इस दिन ब्रह्मा का पूजन व उपवास किया जाये तो व्यक्ति वर्षपर्यन्त सुखी रहता है.वर्ष के प्रारंभ में तैलाभ्यंग अवश्य करे ऐसा धर्मशास्त्रों में कहा गया है.इस दिन सबको चाहिये कि अपने-अपने घर में संप्रदायनुसार ध्वज लगायें.तोरणादि से गृह सुशोभित करें. मंगल स्नानकर देवता,ब्राह्मण,गुरू और धर्म-ध्वज की पूजा करें.और उसके नीचे पंक्तिबद्ध बैठकर सभी एक स्वर से धर्मध्वजा गीत का गायन करें.स्त्रियां,शिशु आदि नूतन वस्त्राभूषणादि परिधान धारणकर उत्सव मनाए.ब्राह्मण का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें.प्रथम वासन्तीय नवरात्र में नवगौरी के पूजन दर्शन का विधान है.जिसका क्रम इस प्रकार है.(१) मुखनिर्मालिकागौरी (२) ज्येष्ठागौरी (३) सौभाग्यगौरी (४) श्रृंगारगौरी (५) विशालाक्षीगौरी (६) ललितागौरी (७) भवानीगौरी (८) मंगलागौरी (९) महालक्ष्मीगौरी.

चिन्तनीय

आपकी स्थिति कौन सी है?

सत्संग में, स्वामी जी ज्ञान की वर्षा कर रहे थे, सभी श्रोता तन्मयता से सत्संग सुनने में मस्त थे. सत्संग की समाप्ति पर एक जिज्ञासु ने स्वामी जी से प्रश्न किया........

जिज्ञासु–स्वामी जी, मुझे अपने प्रश्नों का समाधान चाहिए.

स्वामीजी–बेटा प्रश्नों का खुलासा करो.

जिज्ञासु ने कहा–

पहला–यहाँ है पर वहाँ नहीं है,

दूसरा–यहाँ भी है, पर वहाँ नहीं है,

तीसरा–यहाँ भी है, वहाँ पर भी है,

चौथा–यहाँ भी नहीं है, वहाँ भी नहीं है,

स्वामीजी–बेटा प्रत्यक्ष उदाहरण चाहोगे या सिर्फ समझा दें.

जिज्ञासु–जी, प्रत्यक्ष उदाहरण दें, तो उचित होगा.

स्वामी जी ने उसे कल सुबह आने को कहकर विदा किया.

1 दूसरे दिन जिज्ञासु को साथ लेकर एक वैश्या के यहां पहुँचें जिज्ञासु को दिखाते हुऐ कहने लगे, यह है तुम्हारे पहले प्रश्न का उत्तर..........जिज्ञासु कुछ समझ न सका, उसने स्वामी जी से खुलासा कर, समझाने का निवेदन किया. स्वामी जी ने कहा.....इस स्त्री के पास इस लोक में जीने लायक सब सुख सुविधा प्राप्त है, लेकिन इसने अपने परलोक के लिए कुछ जमा नहीं किया है. इसे यहाँ तो सब कुछ प्राप्त है, पर परलोक में कुछ भी नहीं है.

2 इसके बाद स्वामी जी जिज्ञासु को साथ लेकर एक साधु की कुटिया पर गये. कुटिया में कुछ भी सामान न देखकर, स्वामी जी ने जिज्ञासु को बतलायाः यह है तुम्हारे दूसरे प्रश्न का उत्तर............इसका खुलासा करते हुए बताया कि इस साधु के पास सुख सुविधा के नाम पर कुछ भी नहीं है, पर इसने परलोक के लिए बहुत कुछ जमा कर लिया है.

3 इसके बाद स्वामी जी जिज्ञासु को साथ लेकर एक धर्मात्मा, धनी व्यापारी के पास पहुँचे. व्यापारी ने साधु को प्रणाम किया, कुशलोपरांत व्यापारी ने पूछा..............स्वामी जी हमारे लायक कोई सेवा कार्य हो तो बतावें. स्वामी जी ने उस व्यापारी से कहा कि अमुक गाँव वाले पानी के लिए प्यास से तड़प रहे हैं. उनके लिए दो कुएँ बनवाने हैं. व्यापारी ने स्वामी जी की आज्ञा शिरोधार्य कर कहा–ठीक है. कल से ही कुएँ बनाने का कार्य शुरू हो जाएगा. स्वामी जी ने जिज्ञासु को देखा और कहा यह था तुम्हारे तीसरे प्रश्न का उत्तर......जिज्ञासु कुछ कहे, इसके पहले ही स्वामी जी ने उसे बतलाया–इस व्यक्ति के पास ईश्वर की कृपा से खूब धन–दौलत व सभी प्रकार का सुख साधन है, परलोक के लिए भी इसने अपने धन का सही उपयोग, मानव की सेवा के लिए खर्च किया है. जैसे, धर्मशाला, पाठशाला, दवाखाना व कुएँ आदि बनवाता रहता है. इस प्रकार धन का सही उपयोग कर इसने वहाँ भी काफी कुछ जमा कर रखा है.

4 इसके बाद जिज्ञासु को साथ लेकर स्वामी जी एक निर्धन भिखारी के पास पहुँचे, और कहा यह है आपके चौथे प्रश्न का उत्तर...........इस भिखारी को सुख सुविधा तो क्या, खाने के लिए भी दर–दर भटकना पड़ता है. इसी चक्कर में यह भगवान नाम का भी स्मरण नही करता है. जिससे इसे यहाँ तो कुछ न मिला और न इसने वहाँ के लिए कुछ जोड़ा है.

अन्त में स्वामी जी ने जिज्ञासु से कहा कि मैंने तुम्हारे चारो प्रश्नों का उत्तर दे दिया, अब हमें तुम ये बताओ कि आपकी स्थिति कौन सी है?

आपकी स्थिति कौन सी है.

नोट–यह सवाल सिर्फ उस जिज्ञासु के लिऐ नहीं है. अपितु हम सभी से है. आप भी अपने मन में विचार करें कि आपकी स्थिति क्या है?

गुलकुमार लालवानी, कानपुर

मीठी–वाणी

मीठी और हितभरी वाणी दूसरों को आनन्द,शांति और प्रेम का दान करती है और स्वयं आंनद,शांति और प्रेम को खींचकर बुलाती है. मीठी और हितभरी वाणी से सद्गुणों का पोषण होता है. मन को पवित्र शक्ति प्राप्त होती है. बुद्धि निर्मल बनती है. वैसी वाणी में भगवान का आशीर्वाद उतरता है और उससे अपना,दूसरों,सबका कल्याण होता है. उसमें सत्य की रक्षा होती है और उसी में सत्य की शोभा है.

डाक रजि. ग्वालियर संभाग - 161/2002-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) • भा. शा. - 297

वन्दनीय भक्त

1. समस्त कार्य छोड़कर जो सर्वदा एकमात्र भगवान्‌का ही अवलम्बन करता है,एकमात्र भगवान्‌की ही सेवा-पूजा में तन-मन धन से निरन्तर नियुक्त रहता है,वह भक्त नमस्कार-योग्य है.

2. जो भगवान में समस्त लोक और समस्त लोकों में भगवान् का दर्शन करता है,जो सर्वत्र समानबुद्धि रखता है और सर्वभूतों में प्रेम रखता है,वह भक्त नमस्कार योग्य है.

3. जिसको अपने और पराये का भेद नहीं है,जिसको इच्छा-द्वेष और अभिमान नहीं है तथा जो सर्वदा पवित्र एवं भगवान् में दत्तचित्त है,वह भक्त नमस्कार-योग्य है.

4. जिसका मन सम्पत्ति या विपत्ति मे भगवान् को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाता जो सर्वदा सत्यवादी एवं सदाचार-परायण है,वही भक्त नमस्कार-योग्य है.

5. जो भगवान् का सर्वत्र दर्शन करता है, जिसको संसार से अभय प्राप्त है जो अन्य प्राणियों को अभय प्रदान करता है जो संसार से उदासीन है तथा जो आश्रम धर्म में कुशल है वही भक्त नमस्कार-योग्य है.

6. जो सर्वदा चातक की नाईं एकनिष्ठ है,सर्वदा लक्ष्मण नाईं स्वतन्त्रता से रहित है, सर्वदा द्वन्द्वों अर्थात् शीतोष्ण और राग-द्वेषादि से परे है एवं संतुष्टचित है,वही भक्त नमस्कार-योग्य है.

7. जो भगवान् के अतिरिक्त और किसी को नहीं जानता और न किसी को चाहता है, जिसका मन स्थिर है और जो संयमी है,वही भक्त नमस्कार-योग्य है.

8. जो भगवान् को इसी शरीर से प्राप्त कर लेता है,जिसका समय भगवान्‌के चिन्तन में ही व्यतीत होता है,वही भक्त नमस्कार-योग्य है.

9. जिसने भगवान् को,जो कि एकमात्र सत्य वस्तु है,आत्मसमर्पण किया है,वही भक्त नमस्कार-योग्य है.

10. जिसका प्रेम ही अवलम्बन है, जिसने मत-मतान्तर को पार कर लिया है और जिसका हृदय प्रेममय है,वही भक्त नमस्कार-योग्य है.

ऐसे भक्तराज के दर्शन,प्रणाम और सेवा करने वाले का जीवन धन्य है.ऐसे भक्त की कृपा से प्रेम की वृद्धि और कामनाओं से मुक्ति होती है,भक्त का हृदय ही भगवान् का विलास-स्थान है.भक्त के हृदय से भगवान् का स्वरूप और भगवान् की महिमा प्रकाशित होती है.ऐसे भक्त को त्यागकर और किसका संग करें? भक्त सम्पत्ति,सिद्धि अथवा कैवल्य-मुक्ति नहीं चाहता.वह सर्वस्व त्याग देता है और सम्पूर्ण रूपसे भगवान्‌में विलीन होता है.अर्थात् आत्मविसर्जन करता है,भगवान्‌में आत्माकी आहुति प्रदान करना सर्वश्रेष्ठ यज्ञ है,यही परम पुरुषार्थ भी है.जो जिस पदार्थ को चाहता है,उसीको प्राप्त भी करता है. जो कुछ नहीं चाहता वह भगवान को प्राप्त करता है.भक्तका धन केवल श्रीकृष्ण के चरणकमल हैं और वह धन केवल भगवान्‌की कृपा से ही प्राप्त होता है.

(श्री उड़िया बाबाजी के उपदेश)

सू



समस्त स
उनके प्रेषण पत के ऊपर सदस्यत
रसीद संख्या व शुल्क अवधि
है, कृपया उसे अच्छी तरह जाँच
सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त
पहले ही अपनी सदस्यता का न
सदस्यों को करा लेना चाहिए
– व

सदस्यता क्रमांक

श्री

RH-4832-15060-7/2004
SHRI KISHANCHAND BOOTANI
E-19, MADHUVAN COLONY,
AJMER (RAJ)

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रेम प्रकाश संदेश कार्यालय से सज्जाकर हरिओम ऑफसेट, कम्
करवाकर कार्यालय: स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 0751-2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 0751-2454183